111 Its Pes r el

बूढ़ा वर

2028
18/12/48

प्रहसन

श्रीयुत दीनबन्धु मित्र के एक प्रहसन का अनुवाद ।

अनेक पुस्तकों के प्रणेता

बाबू ब्रजनन्दन सहाय वकील आरा कृत ।

म० कु० बाबू रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित ।





पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर

बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित ।

१९०६

भूमिका ।

प्रिय पाठकवृन्द !

सन १६०४ ई० की श्रीदुर्गापूजा की छुट्टी में जब मैं अपने ससुराल ज़िला वीरभूमि सूरीनगर निकटवर्ती तेलपाड़ा ग्राम गया था, मुझे प्रसिद्ध नाटककार श्रीयुत दीनबन्धु मित्र कृत 'विए पागल बूढ़' प्रहसन पढ़ने का संयोग मिला। पढ़ने से मेरे मन में हास्यरस का उद्रेक हुआ और मेरी यह इच्छा हुई कि अन्य हिन्दीरसिक भी इस का आनन्द अनुभव करें ! बस इच्छा कार्य्य में परिणत हुई और वहीं एक सप्ताह में यह अनुवाद तयार हुआ। १६०५ के फाल्गुन मास में मेरे घर अग्निकोप से इतर पुस्तकों के साथ इस " बूढ़ा वर " का भी कुछ अंश नष्ट हो गया था। इधर कामों के उलझावे में पड़ कर मेरा ध्यान इस ओर न गया, परन्तु एक दिन बात ही बात में "हिरण्यमयी" के रचयिता पं० ईश्वरीप्रसाद शर्म्मा ने कहा कि " आप इसे ठीक कर क्यों नहीं छपवाते ? " यह सुन इस की जली कापी को देखा तो ज्ञात हुआ कि पुस्तक जितना मैं समझता था उतना नुक़सान नहीं थी किन्तु स्वयम् श्री विद्यापति ठाकुर कृत पद्यों के संग्रह करने में फँसे रहने के कारण मैंने इस जली कापी के साफ़ करने का भार उपर्युक्त परिडत जी को दिया और मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उन्हों ने परिश्रम कर इस की कापी फिर से साफ़ लिख दी।

इस में सन्देह नहीं कि प्रहसन लेखक ने बूढ़े ब्राह्मण के सम्बन्ध में बहुत से ऐसे वाक्य कहलवाये हैं और ऐसे कार्य्य कराये हैं जिन से कहीं २ हंसी के बदले मन में घृणा उत्पन्न होती है। परन्तु जहां तक मैं समझता हूं वृद्धावस्था के विवाह के दूषणों के साथ २ उन्हें यह भी दिखलाना अभिप्रेत था कि जिस समय अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रथम आदर और ब्रह्मसमाज का आदि प्रचार बंगाल में आरम्भ हुआ थ उस समय बंगाली छात्रों का अपने धर्म्म कर्म्म तथा प्राचीन धर्म्मपराय,

शिष्टजनों के साथ प्रायः कैसा बर्ताव और व्यवहार होने लगा था यदि ऐसा अभिप्राय लक्षित नहीं होता तो मैं अवश्य कहता कि बिना वैसे शब्द प्रयोग और कार्य्यों के भी काम चल सकता था।

इस प्रहसन के पढ़ने से पाठक हास्यरस का आनन्द तो अवश्य अनुभव करेंगे, अतएव आशा है कि वे लोग इसे आद्योपान्त पढ़ कर दो घड़ी मन बहलावेंगे और समय कैसा २ रंग बदलता है और कभी २ प्राचीन का अनादर करते हुये लोग नये रंग ढंग की ओर किस उमंग से दौड़ते हैं तनिक इस पर भी ज़रूर विचार करेंगे।

खड्गविलास प्रेस के अध्यक्ष म० कु० बाबू रामरणविजय सिंह और उन के सुयोग्य कर्मचारी बाबू गोकर्णसिंह को असीम धन्यवाद है कि जिन लोगों ने इसे शीघ्र प्रकाशित कर मेरा उत्साह बढ़ाया है।

ब्रजनन्दन सहाय।

बूढ़ा वर प्रहसन के पात्र

राजीवलोचन—बुड्ढा ब्राह्मण ।

नरसिंह राम—
रामता—
भुवन—
मोहन—
गोपाल—
केशव— } स्कूल के छात्र ।

वरतुहार—

राममणि—
गौरमणि— } राजीवलोचन की कन्याएं ।

सुशील—राजीवलोचन का नाती ।

पेंचा की मा—एक डोमिन ।

बैकुण्ठ—एक नाऊ ।

कई अपर मनुष्य और बालक ।

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१८	दुखी	दुःखी
२५	१७	अपरूप	अपरुप
२६	१४	प्रतिवासी	०
३०	३	को मन्त्र	का मन्त्र
३१	१	नहि	नहीं
३२	३	लगत	लगता
”	१७	धोल	धौल
३३	१	उठा है	उठी है
”	१७	ाच्चा	बच्चा
३४	२२	मरे	मरे ,
३५	४	और पड़ोसी०	को छोड़ और
३६	१६	कै	के
३६	६	सादी	शादी
”	१६	वाह्मण	ब्राह्मण
”	२०	जानता	जानती
	ब्राह्मण	ब्राह्मण	
४१	६	धाती	छाती
४८	१६	मुख	मुख
५४	६	खूँकी	खूँटी
”	१६	का	की
”	”	भला	भली
६२	१	गंग	अंग
६३	६	दास	दारु
६४	५	विदूल	विह्वल
”	१६	मख	मुख
६६	२२	झांकती	झांकता
७०	७	कसा	कैसा
”	”	दीवा	दीर्घा

बूढ़ा वर।

प्रहसन।

प्रथम अङ्क—प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान—सदर रास्ता।

(नरसिंह राम और रामता आते हैं।)

-बुड्ढा ऐसा पाजी है कि संसार मात्र की निन्दा किया करता है।

—केशव बाबू को सभी अच्छा कहते हैं केवल यही बुड्ढा उन की शिकायत किया करता है—कहता है--कि जब कौलेज में पढ़ कर स्कालरशिप पाता है तब उस की जात पाँत का क्या ठिकाना है?

-माथे पर गीध नाच रहा है तब भी लड़ाई झगड़ा नहीं छोड़ता। परसाल बगीचा बेंच कर मुकद्दमा लड़ता था। स्कूल में एक पैसा देना पड़े तो कहता है कि हम दरिद्र ब्राह्मण ठहरे रुपया कहां से पावेंगे?

—चक्रवर्ती ने इस के दामाद के घर निमंत्रण नहीं दिया-था इसी से उस के यहां खाने नहीं गया और अपने टोले के किसी को नहीं जाने दिया, दो सौ आदमियों का भात सड़ गया।

न०-इस के दामाद का घर ठहरा दूसरे गाँव में, उस को क्यों नेवता देगा ? उस को बुलाने से और सौ आदमियों को खिलाना पड़ता।

रा०-केशव बाबू के विषय में यह जैसी बुरी २ बातें कहता है; केवल अपने पाजीपन का परिचय देता है।

न०-सच बात कहने में क्या ? देखो, राजीवलोचन के मरे बिना, निस्तार नहीं है। भुवन के नानिहालवालों का इस ने हुक्का पानी बन्द कर दिया है। जानते ही हो उन सभों का अपराध तो भारी है-कालीप्रसाद का लड़का क्रिस्तान (*Christian*) होने गया था, पर फिर आने पर उस को बिचारों ने जात से निकाल नहीं दिया साथ रक्खा है, बस और क्या ?

रा०-कल बच्चे को खूब ही छकाया-काग के दस गंडे अण्डे का रस इस के माथे पर उभिल दिया था।

न०-कब ?

रा०-कल सबेरे, स्नान कर रामनामा ओढ़ जैसे ही घर में घुसता था कि मैं ने इस की छत से अंडे के रस की एक हाँड़ी, इस के सिर पर उभल कर चल दिया। पाजी मुझे देखते ही जल भुन जाता है;—कितनी गालियां देता था, पर मुझे देख नहीं सका

न०—भुवन ने भी बड़ा मज़ा किया। बुड्ढा धोती और रामनामा रखकर स्नान करता था, उसी समय भुवन ने खरगोश का गुर्दा इस के रामनामा में बांध दिया। बुड्ढा स्नान कर रामनामा देख माथा पीट रोने लगा—कहता था कि रामता के सिवाय और किसी का यह काम नहीं है।

रा०—दुष्ट मुझ से बड़ा रंज रहता है—कोई कुछ करे मुझी को दोष देगा; कहता है कि कमीने को लिखना पढ़ना सिखाने से विपरीत फल होता है।

(भुवनमोहन आता है)।

भुवन०—इन्स्पेक्टर साहब आये हैं, कल हम लोगों की परीक्षा होगी।

न०—हम लोगों को सब याद है।

भु०—मुझे भी सब कुछ याद ही है। कुछ पर्वा नहीं।

रा०—देखो भाई, पण्डित जी हम लोगों के लिए इतना परिश्रम कर रहे हैं, यदि हम लोग भली भांति परीक्षा नहीं दे सकेंगे तो वे बहुत दुखी होंगे।

भु०—राजीवलोचन इन्स्पेक्टर साहब को देख कर बहुत रंज हुआ है, कहता है, "यही क्रिस्तान साला आया है।"

न०—यह इन्स्पेक्टर साहब से इतना रंज क्यों रहता है?

रा०—इन्स्पेक्टर साहब से इस को एक दिन *English*

Education (अंग्रेज़ी शिक्षा) पर बहस हुई थी। इन्स्पेक्टर साहब कहते थे कि *English Education* अच्छा है और यह कहता था कि नहीं, अंग्रेज़ी पढ़ने से धर्म्म नष्ट हो जाता है। अनेक तर्क वितर्क के बाद इन्स्पेक्टर साहब ने बुड्ढे को परास्त किया; अभागे को विचार करने की क्षमता तो है नहीं, चालाकी से जो कर ले— जब कुछ बस नहीं चला तो इन्स्पेक्टर साहब को गाली देने लगा—जो नहीं कहने को सो सब कहने लगा।

-यदि मैं वहाँ रहता तो बुड्ढे के गले में जूतों की जयमाल पहिरा देता।

-यदि परमेश्वर की कृपा से कल परीक्षा अच्छी हुई तो देखना कि मैं हूं या बुड्ढा।

—इन्स्पेक्टर साहब को सन्तुष्ट किये बिना कोई खेल तमाशा अच्छा नहीं लगेगा।

-सुना है, कलकत्ते के छात्र परीक्षा हो जाने पर गिल्वट की बाजी देते हैं, हमलोग परीक्षा होने पर राजीवलोचन के माथे पड़ेंगे।

—वह सांप तो है न ?

-सब है, पहले परीक्षा तो हो जाने दो।

-कौन सांप ?

साठी (खखड़ा) का सांप

न०—उस से क्या होगा ?

रा०—दो बबूल के काँटे और एक साठी के सांप से बुड्ढे का सर्व्वनाश होगा। जो रामता की बात नहीं सह सकता वह रामता के चपेटों को सहेगा। लोग जानते हैं कि बाबू जो सांप का मंत्र जानते थे सो मरते समय मुझे सिखला गये हैं—बुड्ढे को जब सांप काटेगा तो मुझे अवश्य ही बुलावेगा और मैं चपेटा लगा लगा के उस का विष झाड़ूंगा।

(गोपाल आता है)

गो०—बड़ा मजा हुआ—राजीवलोचन की भारी नक़ल निकली।

रा०—कहो २ क्या ?

गो०—"पेंचा की मा" कहने से बुड्ढा लाठी ले मारने दौड़ता है, ऐसा खखुआता है मानों कच्चा ही खा जायगा!

नर०—क्यों ?

गो०—पेंचा की मा बुड्ढे की लड़की के साथ बातचीत कर रही थी; बुड्ढा भात खा रहा था। बात ही बात में पेंचा की मा ने राममणि से कहा, "तुम्हारे बाबू से मेरी वयस कम है।" बस सुनते ही बुड्ढा मारे खीस के जल गया। भात की थाली पेंचा की मा पर फेंक दी और ईंटा

मारने लगा टोले महल्ले के लोग जमा हो गये। बुड्ढा कहने लगा, "देखो न" हमारे विवाह की बात होती है और यह पाजी कहती है कि हम इस से बड़े हैं ; जब हम पाठशाला में पढ़ते थे तभी से चुड़ैल को ऐसी ही देखते हैं।

—कौन पेंचा की मा ?

—डोमिन, उस का स्वामी मर गया—बेचारी अकेली रहती है, उस को कोई नहीं है। एक सूअर को लिये एक झोपड़ी में पड़ी रहती है।

—दोनों की वयस समान होगी ?

—यदि कोई कहे कि पेंचा की मा की वयस कम है तो राजीव गाली देने लगता है और ढेला मारने दौड़ता है। अब अधिक कहना नहीं पड़ेगा—बस "पेंचा की मा"—कहने ही से हो जायगा।

(नेपथ्य में:—

बूढ़ा बाम्हन उजबुक वर,
पेंचा की माई से सगाई कर॥)

(राजीवलोचन और दो लड़कों का प्रवेश)

रा०—यमराज सोयेहुए हैं, इतने लड़के मरते हैं, तुम सब की मौत नहीं आती, क्या कहें दौड़ नहीं सकते, नहीं तो एक २ को पकड़ कर खा जाते

बालक गण "बूढ़ा बाम्हन उजबुक वर" इत्यादि।
नर०—जा, सब स्कूल जा, बेला हुई, इन्स्पेक्टर साहब आये हैं—सवेरे स्कूल जा।

(बालक सब जाते हैं)

आप को भी तो नहाने में बहुत देर हुई—क्या हो, नाना कार्य्यों में व्यस्त रहते हैं।
राजीव०—हम को सभों ने पागल कर छोड़ा।
नर०—घोर अन्याय! आप विज्ञ, बुद्धिमान् ठहरे—सुवर्णग्राम समाज के मस्तक; आप से ठठोली करना अति अनुचित है। आप का गृह शून्य हो जाने से सभी दुःखित हैं।
राजीव०—बापू तुम हमारे बाग़ में आना, तुम को हम पक्का शरीफ़ा और अमरूद देंगे।
रा०—जो कनिया ठीक हुई है वह आप की गरदन तक होगी।
राजीव०—कौन कनिया?
रा०—जी वही—पेंचा की मा।
राजीव०—पाजी, बदज़ात—जा, कांधे पर हर फार ले; तुझे लिखने पढ़ने से क्या मतलब? देखते हैं तेरे चचा धान कैसे बोते हैं? राजीव ऐसा सोझा आदमी—अभी नायब से कह कर तेरे खेत में सूअर रेंगवा देंगे पाजी कहीं का

(सरोष राजीवलोचन चला जाता है)

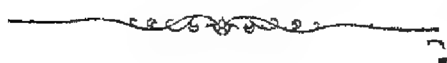
—अच्छा तैयार हुआ है।

—विवाह का नाम सुन नाचने लगता है—कनक बाबू के बाग़ के पास इस की चार बिगहा ज़मीन है ; उस का दूना मूल्य कनक बाबू देते थे, पर बुड्ढे ने न दी। राममणि ने भी कितना कहा पर उस की बातों को भी नराधम ने नहीं सुना। पर रामता ने कनक बाबू को सिखला दिया कि कहिये कि विवाह का प्रबन्ध कर देंगे बस बुड्ढा आप को ज़मीन ऐसे ही दे देगा। कनक बाबू ने इसी उपाय से ज़मीन को हस्तगत किया। किन्तु उस का मूल्य भी उचित दिया गया है।

—अब तो बड़ा मज़ा है—बेचारा दोनों बेला आदमी भेज कर ख़बर लेता है कि विवाह की बात क्या हुई ? कनक बाबू ने मुझ से कहा है कि कुछ गोलमाल कर के इस का भ्रम दूर कर दो। मैं क्या करूं सो कुछ ठीक नहीं कर सकता

—बाबू दुःखित होते हैं नहीं तो इस के पान के डब्बे में चारा भर देता।

—तुम सबों को कुछ करना नहीं पड़ेगा, अकेला हम उस के लिए काफ़ी हैं। (सब जाते हैं)



द्वितीय गर्भाङ्क ।

(स्थान—राजीवलोचन की ड्योढ़ी)

(राजीवलोचन खाट पर बैठा हुआ है)

रा०—पेंचा की मा बदज़ात ने तो हम को बुड्ढा बना दिया। गांव भर में हल्ला कर दिया है कि उस की जब शादी हुई तब हम रामलाल के घर गुमास्तगीरी करते थे। कैसी भयानक बात कहती फिरती है !!! हमारा खिज़ाब और सिंगार सब व्यर्थ हुआ ! इस बात को मन में सोचने से भी हानि हो सकती है। हे मन ! असली उमर भूल जा, समझ कि हम अभी बीस बरस के छोकड़े हैं, मटरबूँट अभी तक कड़ २ चबा सकते हैं, दौड़धूप कर सकते हैं; तैर कर नदीपार हो सकते हैं; षोड़शी प्रेयसी को अनायास गोद में ले कर घूम सकते हैं;—उस चुड़ैल को देखते ही हमारा शरीर जल उठता है;—नहीं तो कुछ रुपया दे कर उस से यह कहने को कहें कि जिस दिन पेंचा मरा उसी दिन हमारा जन्म हुआ ! हाय ! फिर भी निकम्मी पाजी का नाम लिया। उस का जब मुंह बिचकाना याद आता है तो हमारा हृदय कांप उठता है। (दरवाज़े में धक्का) कौन है ? कौन है ? ठक ठक कर दर्वाज़े में धक्का

मारता है? कौन है? (नेपथ्य मे) हम लोग दो अतिथि है।

—यहाँ नहीं—यहां नहीं—यह जनाना मकान है।

(नेपथ्य में) दाता संध्या हुई हम लोग इस समय कहां जांय। आप अनुग्रह कर हम लोगों को आज कहीं ठहरने की जगह दीजिये।

—किस की सन्ध्या हुई? जाइये साहिब, किसी दूसरी जगह जाइये। हमारे घर में आदमी जन नहीं हैं, काम कौन करेगा? हम तो नितान्त बुड्ढे हैं (जीभ काटकर स्वगत) इसी से इन सब बातों को नहीं सोचना चाहिए। देखो न, अपने से आप को बुड्ढा कह दिया !!!

(नेपथ्य में) हम लोगों को कुछ चावल दाल दीजिये हम लोग दूसरी जगह बना कर खा लेंगे। हम लोग निस्सहाय हैं, पास में कुछ नहीं है, थोड़ा चावल दाल देकर हम लोगों की रक्षा कीजिये। दिन में हम लोगों ने कुछ नहीं खाया।

वि०—दूर हो पाजी, दूर हो यहाँ से, पाजी सब अतिथि बन कर आते हैं पर जगह पाने पर चोरी करके चले जाते हैं।

(नेपथ्य में) पर आप का तो कभी कुछ चोरी नहीं न गया?

वि० गया या न गया तेरे बाप का क्या? पाजी, बदमाश! दूर हो यहां से।

(नेपथ्य में) नर प्रेत! इस सन्ध्या में दो भूखे ब्राह्मण को किञ्चित् अन्नदान नहीं कर सका? चलो भाई, किसी दूसरे दरवाज़े पर चलो।

वि०—राममणि बहुत सन्तुष्ट हुई है, कनक बाबू को जो हमने ज़मीन दी उस से सभी सन्तुष्ट हुए हैं। अब जो कनक बाबू हम को सन्तुष्ट कर सकें तब तो ठीक, नहीं तो उन के घर दुआर में आग लगा देंगे। कनक ऐसा आदमी नहीं है, एक कनिया अवश्य ठहरा ही देगा, उस को कितनी क्षमता है—कितना मान है। उसी के प्रभाव से तो आज बाघ और बकरी एकही घाट में पानी पीती है (दरवाजे में धक्का) ठक! ठक!! रात-दिन ठकठक!!! (पुनः आवाज़) फिर भी ठक-ठक!!! हाय! ठकठक करता ही जाता है (पुनः आवाज़) कौन है रे? बोलता क्यों नहीं? केवल ठकठक क्यों कर रहा है? (पुनः आघात) किवाड़ तोड़ देगा क्या? बोलता क्यों नहीं? राममणि को पुकारें क्या? साले सब जहन्नुम गये, रामता बदजात तो मेरा परम शत्रु है, पाजी को कैसे जवाब दूँ कुछ उपाय नहीं सूझता।

(नेपथ्य में) राजीवलोचन जी घर पर हैं ? ऐ साहब तकिया लगा कर हम लोग भी एक दिन ऐसेही पढ़ते थे, पढ़ने में इतना मन लग गया है कि मेरी बातों को भी नहीं सुनते ?

राजीव०—(स्वगत) अरे यह तो बरतुहार जान पड़ता है ! अहाहा, इस ने एक बारगी मुझे छोकड़ा समझा, मालूम होता है हमें अच्छी तरह देख न सका। केवल धोती का ढाकाकोर देख कर इस को भ्रम हुआ, अच्छा है,

(प्रकाश) आप किस को खोजते हैं ?

(नेपथ्य में) मैं राजीवलोचन जी को खोजता हूं।

राजीव—क्यों क्या है ?

(नेपथ्य में) किवाड़ खोलिये तो कहता हूं।

राजीव०—क्यों आये हैं ? और किस के भेजे आये हैं, जब तक आप नहीं कहियेगा हम अपना पढ़ना छोड़उठ नहीं सकते।

"रामचरित मानस यहि नामा" इत्यादि।

(नेपथ्य में) बाबू साहब ? राजीव महाराज के विवाह की बात करने के हेतु कनक बाबू ने मुझ को भेजा है। मैं बरतुहार हूं !

राजीव०—"नव उज्ज्वल जलधार हार हीरक सी सोहति।
बिच बिच छहरति बूंद मध्य मुक्तामनि पोहति॥"

(नेपथ्य में) नवीन पुरुष स्वभावतः रसिक

और कविताप्रिय होते हैं। मैं प्रेमाम्बुद हूं, राजीव बाबू के विच्छेद-सन्तप्त चित्त में प्रेम बारि वर्षण के हेतु मेरा यहां आगमन हुआ है।

व०-(स्वगत) इसी समय हम स्वरचित नवीन कविता क्यों नहीं सुना देते ? (प्रकाश)

कटहल कोआ सम है प्रीत।
लस्सा विरह सतावत मीत।
पंकजदल मन तनिक न भावत।
कंटकनाग जो निकटन आवत।
मधुनहिं मीठ मीत सुनु लागत।
जो मधुमाछी डंस न मारत।
आयो विष पीयूष के संग।
अंकित है मृग ससि के अंग।

(नेपथ्य में) आप का सुर तो बड़ा मीठा है। आप किवाड़ खोल दीजिये मैं भीतर आप के नवीन मुखचन्द्र का अमृत पान कर परितृप्त होऊं।

व०—जैसी इच्छा हो (किवाड़ खुलता है, वरतु-हार आता है और पुनः किवाड़ बन्द कर दिया जाता है)

—मैं देर तक नहीं बैठ सकता। आप का देश बहुत खराब है, बालक सब मुझे विदेशी जान कर बदन पर धूर फेंकते थे। मैं अब उस टोले में कभी नहीं जाऊंगा

राजीव० महाशय ! यह घर दरवाजा आप का अपना है, इस को छोड़ कर किसी दूसरी जगह नहीं जाना पड़ेगा। आप आराम से रहिये, आप को यहां किसी बात की तकलीफ़ नहीं होगी।

वर०-राजीवलोचन पंडित को एक बार सम्वाद तो दे दीजिये।

राजीव०-हमारा ही नाम तो राजीवलोचन है। ओ राम-मनी, राममनी जरा टिकिया सुलगा कर दे तो जा (चिलम चढ़ाता है) भाई ! बाप के मर जाने से सब भार मेरे ही कोमल कन्धे पर आ गया है। दो पहर को कहां भोजन हुआ था ?

वर०-कनक बाबू के घर पर। मैं पहले ही से एक बात आप को कह रखता हूं। आप किसी के हंसी ठट्ठे में न भूलियेगा। इस सम्बन्ध में बहुतेरे आप को भांजी देंगे, आप के आत्मीय बन्धु सभी इस में अपनी असम्मति प्रकाश करेंगे। और कहेंगे कि चार जन लुच्चे गंजेड़ी मिल कर पितृहीन बालक को नष्ट कर रहे हैं।

राजीव०-आप हमारे परम बन्धु हैं, हम किसी की बात न मानेंगे, सौ बार निषेध करने पर भी नहीं मानेंगे। आप जिस राह से जिस रूप से चलावेंगे हम उसी राह से उसी रूप से चलेंगे। हम मुरब्बी-हीन हैं; आज से आप हमारे मुरब्बी हुए।

–आप की बातें सुन मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ। आप का वयस अधिक क्या है, आप के पिता तो परम पंडित, अतुल ऐश्वर्य्य के मालिक और कुलीनों के चूड़ामणि थे। बहुत छोटी अवस्था में उन्हों ने आप का विवाह कर दिया था, इसी से आप को आज दोआह कहना पड़ता है, नहीं तो इस उमर तक तो कितने बूढ़े कुआरही रहते हैं। यही देखिये न कनक बाबू के पुत्र की उमर सोलह बरस की है; इसी अवस्था में घर में पतोहू वर्तमान है। परमेश्वर न करें पर जो कहीं पतोहू मरजाय तो क्या उस के लड़के को दोआह जान कर घृणा करेंगे ? लड़कीवाले ने सब भार मुझ पर रक्खा है। अब इधर की स्थिरता जान लगन निर्णय कर शुभकर्म सम्पन्न कर दिया जाय।

वि०–इस पक्ष का मतामत क्या ? आपने उस पक्ष का भार लिया, इस पक्ष का भी भार आपही के ऊपर है। भाई मसल है कि "मातु पिता प्रिय बन्धु हमारे, सब काजन के साधनहारे" आप अपने को भी वही समझिये।

–मैं आप की कविता–शक्ति से और भी सन्तुष्ट हुआ हूं। आप की सास की इच्छा है कि एक सुरसिक दामाद मिले। कहती हैं कि जैसी लड़की मधुरमिष्ट बीनसी बोलती है, वैसे ही एक रसिक

के हाथ में पड़े कि उस का जीवन सुफल हो।

राजीव०–कनिया की उमर क्या होगी ?

बर०—इस बात को कहीं प्रकाश मत कीजियेगा। कनिया ने तेरह लांघ कर चौदह में पैर दिया है। भले मानुस को मुरब्बी नहीं रहने से बहुत क्लेश होता है। तुम्हारे ससुर रुपया गहना सब छोड़ गये हैं, पर जो बर ठीक कर दे ऐसा आदमी नहीं है। इसी से इतनी देर हुई और लड़की कुआर रही। आप अब अपने आदमी हैं आप से छिपाना क्या, लड़की को स्त्रीधर्म हो गया है।

राजीव०–अच्छाही तो है, इस में दोष क्या है ?

बर०–सोभी कुछ बयस पाकर नहीं हुआ है; चंपक हमारी स्वभावतः हृष्ट-पुष्ट है, विशेष आदर की कन्या है, नाना प्रकार का अच्छा भोजन पाती है, इसी से इतनी जल्दी यह बात हुई।

राजीव०–महाराज! आप लज्जित क्यों होते हैं? हम भी तो ऐसाही चाहते हैं, हम तो कुछ पांच छः वर्ष के लड़के नहीं हैं, तिस पर मेरे घर में गृहणी नहीं है। लड़की सयानी होने से मेरा बहुत तरह से भला हो सकता है!

बर०–आप की जैसी इच्छा है वैसाही धन भी मिला, "जो रोगी को भावे सो बैद फ़रमावे।" (राम-मणि आग लेकर आती है)

राम॰ (चिलम पर आग रख कर) बाबू दूध गरम करलाऊं ?

राजीव॰-(मुंहचिढ़ा कर) बाबू ! दूध गरम कर लाऊं ? पाजी, बदमाश, अभागी, (मुंह चिढ़ा कर) बाबू कहती है, मैं इस का बाबू हूं !

राम॰—बुढ्ढा होने से बहादुरी बढ़ जाती है, शूल की व्यथा से मरते थे दूध—

राजीव॰—तेरे सात पुश्त को शूल हो। पाजी यहां से दूर हो। रांड़, अब हमारे घर में तू रहने न पावेगी, तेरे भतार का बाबू रखे तो अच्छा हो नहीं तो जो चाहे सो कर।

राम॰-आप को मति भ्रम हुआ है, अब आप सठिया गये। हा परमेश्वर ! क्या तूने विधवा के ललाट में इतना फल लिखा है ? दासी ऐसी काम करती हूं तौभी खुशी मन मे एक मुठी अन्न नहीं पाती हूं। बाबू मैं तुम्हारी—

राजीव॰—हाय, मरे ! फिर भी बोलने लगी, अरे बच्चा तू घर में जा, एक विदेशी बैठा हुआ है, जरा इस से भी तो लज्जा कर।

राम॰-मेरा तीन पन बीत गया। अब मुझे क्या लज्जा है ? यदि मेरा गणेश बच्चा रहता तो इस से भी बड़ा होता।

राजीव॰ पगली सी यह क्या अंड बंड बकने लगी।

तुझे क्या घर में काम नहीं है ?

राम०—मालूम होता है आज दर्द नहीं है।

राजीव०—आज भी नहीं है, कल्ह भी नहीं था, आगे भी कभी नहीं था, बेटी तेरा पैर पड़ूं, तू घर में जा।

राम०—हायरे! घीव देत घोड़ नरियाय (चलीजाती है)

राजीव०—जैसी मा वैसी ही कन्या।

बर०—यह लड़की तो बड़ी शोख जान पड़ती है, आप को बाबू कह के पुकारती है।

राजीव०—(स्वगत) अब देखते हैं किस्मत में आग लगी।

बर०—यह औरत कौन है महाराज ?

राजीव०-हमारी सौतिन की लड़की, नहीं २ हमारी पहली स्त्री की लड़की।

बर०—महाराज! हाय मेरा परिश्रम विफल गया।

राजीव०-क्यों साहब! यह अमङ्गल बात क्यों सोचने लगे

बर०—वह तो आप की लड़की है न ?

राजीव०—महाराज! सुना नहीं है :-

जो जल डूबि सिमन्तिनी, सलिल पिये दुइ घोंट।
जानि सकत को भेद है, अगम नीर की ओट॥
स्वामी संग रहि नारि, पग कुपंथ पर धरति जब
लखि न सकत करतार, क्या भरता नर बापुरो
गुप्तबात जानत नाहिं कोय।
काको जन्म कौन बिधि होय

पुत्र सुता किस की को अहै।
कौन बाप किस का को कहै ॥
बाप बाप कहि पुत्र पुकारत।
जगत सत्य सम्बन्ध बिचारत ॥
कामिनि का सुत धरम बिचार।
पुत्र पिता का लोकाचार ॥

क्यों कर कहूं कि लड़की हमारी है, यार जी !

वर०-लड़की का जन्म आप के विवाह के बाद ही न हुआ ?

राजी०-इस का भी क्या ठीक है ? आजकल का हाल तो आप जानतेही हैं। कितनी लड़कियों का वयस जब दस वर्ष का हो जाता है तब तक उन की मा कुवारी ही रहती हैं।

बर०-तब क्या वहू ने लड़की को गोद में ले कर भंवरी दी थी !

राजीव०-गोद में लेकर दी थी या अंगुरी धर कर सो क्या अब हम को याद है। वह क्या आज की बात है, तुम से कहैं, जिस दिन हमारा विवाह हुआ उसी दिन पलासी की लड़ाई लड़ी गई थी। महाराज ! कह तो दिया, हाय ! उपाय क्या है ? भाई ! तुमने तो जान लिया पर देखना हमारी सास से यह बात न कहना। तुम को खुश कर देंगे। तुम को बिदाई देने को हम अपना दस बिगहा विष्णु प्रीति बेचेंगे सात

दोहाई भाई, कुछ खेयाल मत करो, हम मातृ पितृ हीन बालक है। सब भार तुम्हारे ही ऊपर है। तुम्हारे उठाने से उठेंगे, तुम्हारे बैठाने से बैठेंगे।

बर०—आप स्थिर रहिये, मैं ऐसा बरतुहार नहीं हूं कि उस औरत को आप की लड़की समझ विवाह नहीं करूंगा यदि उस की मा भी आप की लड़की हो तौभी कुछ पर्वाह नहीं।

राजीव०—अच्छा २ बाबू, आज तुमने मेरी रक्षा की। मैंने तो समझा कि रंज होगये।

बर०—पर तुम्हारी लड़की का मुझे एक डर है?

राजीव—डर क्या? अब उस का भला डर क्या?

बर०—वह यदि पीछे अनादर करे, आप की नव विवाहिता प्रणयिनी को मा न कहे?

राजीव०—अवश्य कहेगी, हमारी लड़की, हमारी स्त्री को मा न कहेगी?

बर०—इसे ठीक किये बिना मैं जबान नहीं दे सकता। हमारी लड़की बड़ी अभिमानी है यह यदि मा कह कर न पुकारेगी तो वह फांसी लगा कर मर जायेगी।

राजीव०—हम अभी ठीक कर देते हैं। आप जांच लीजिये। ओ राममणि! ओ बच्चो! एक बार और तो इधर आ।

(राममणि आती है)

राम॰ मुझे फिर क्यों पुकारा? आपने अभी मुझे गालियां दीं, उस से क्या सन्तोष नहीं हुआ?

राजीव॰—नहीं बेटी, क्या तुझे हम गाली दे सकते हैं! तुम्हारे ही लिये संसार के सब दुःख को उठा रहे हैं। हां तब कहते थे कि हम यदि अब फिर विवाह करें तो तुम्हारी जो नई माता होगी उसे तुम मा कह कर पुकारोगी या नहीं?

राम॰—जैसा तुम्हारा विवाह होगा, वैसेही मैं भी मा कह कर पुकारूंगी। बुड्ढा होने से साध बढ़ती जाती है। रात दिन विवाह विवाह की रट लगाये रहते हैं।

राजी॰—किस बात का क्या उत्तर? मैंने अच्छे मन से एक बात कही और इसने एक अंगीठी आग मेरे बदन पर उभिल दी। अच्छा कहो, हम जिस से विवाह करेंगे उसे तू मा कहेगी या नहीं?

राम॰—मैं भोथी छूरी से उस की नाक काट दूंगी और उसे चुड़ैल कह कर पुकारूंगी।

राजीव॰—तेरा अच्छा लच्छण नहीं देख पड़ता, हम को तू चिढ़ाती नहीं है वरन् अपने मरने की राह बनाती है। हमारी स्त्री को मा कहेगी या नहीं?

राम॰—नहीं कहूंगी, कभी नहीं कहूंगी। आप के जो जी में आवे करें

राजीव०—नहीं कहेगी ?

राम०—नहीं।

राजीव०—तू क्या तेरा बाप कहेगा। जा यहां से दूर हो, मा को मा न कहेगी, देखेंगे, हजार वार कहेगी। तू तो तूही है तेरी क्या हकीकत है। तेरा बाप जो है वह कहेगा।

(राममणि जाती है)

वर०—यह तो देखता हूं सर्वनाश हुआ।

राजीव०—नहीं भाई, इस का भय न करो। ब्राह्मणी घर तो आवे जिस तरह होगा हम मा कहलवा देंगे।

वर०—तुम्हारी लड़की का मुझे एक और भय है ?

राजीव०—और कौन भय है ?

वर०—वह इतनी शोख है कि अनेक भांजी देगी कहेगी कि झूठ सम्बन्ध है, झूठ विवाह है। बाजार की रंडी धर कर सब कनिया बना देंगे।

राजीव०—हम कोई बात न सुनेंगे।

वर०—बूढ़ों से लोग ऐसा ठट्ठा करते हैं, इस प्रकार का विवाह कर देते हैं; इस प्रकार का दश पांच उदाहरण भी मिल सकता है। मुझे सन्देह होता है कि कहीं आप अपनी लड़की की बात में पड़ कर मुझे भी वैसा ही बरतुहार न समझ

लें केवल कनक बाबू के अनुरोध से मैं इस काम पर राजी हुआ हूं।

राजीव०—महाराज! हम छोकड़े नहीं हैं कि किसी के बहकाने में आ जायंगे। तिस पर स्त्रियों की बातों पर तो हम कभी ध्यान ही नहीं देते। आप कुछ चिन्ता न कीजिये। आप यदि साले रामता को भी कनिया बना कर हम को हाथ धरा दीजिये तो हम उस को भी ग्रहण कर लेंगे। पाजी, बदज़ात, हरामजादा कभी उस से पढ़ना लिखना हो सकता है?

वर०—विवाह न करना हो मत कीजिये पर आप गाली क्यों देते हैं? (उठना चाहता है)

राजीव०—क्यों महाराज! हम ने आप को क्या कहा? आप को तो हमने गाली नहीं दी। मेरे सिर की क़सम महाराज! बैठो, (पैर धरता है) तुम रंज मत होओ। बाबा! हम ने तो रामता को कहा।

वर०—तब तो ठीक है (बैठ जाता है) नाम ले कर गाली देने से तो यह भ्रम नहीं होता।

राजीव०—रामता पाजी है। रामता बदमाश है, रामता कमीना है, आप महाराज भलेमानुस हैं, आप अति सज्जन हैं, आप बड़े आदमी हैं।

वर०—रामता सचमुच ही क्या भारी बदमाश है?

राजीव० उस पाजी का नाम सुन कर हमारा बदन

जल उठता है यदि हम छोकड़े को दौड़ कर पकड़ सकते तो एक दम उस को जान से मार डालते, साला हमारा परम शत्रु है।

बर०—गांव में आप का और भी कोई बुरा चाहता है?

राजीव०—हां, और एक औरत है—महाराज! हम को माफ़ करना पड़ेगा, हम उस का नाम नहीं ले सकते।

बर०—भला मुझ पर आप की अतिशय कृपा है—उस का नाम कहने में हर्ज क्या है?

राजीव०—नहीं बाबा! यह तो नहीं होगा अब तो आप माफ़ करें।

बर०—क्या भलेमानुष की स्त्री है?

राजीव०—महाभारत! महाभारत! रामराम!! डोमिन बुड्ढी! चुड़ैल।

बर०—आप इस सम्बन्ध की बात किसी के निकट मत प्रकाश कीजियेगा। बहु को घर में लाही कर इस सम्बन्ध को प्रकट कीजियेगा। आप १००) का बन्दोबस्त कर रखिये।

राजीव०—हमने २००) रु० निकाल रक्खा है।

बर०—आप को अपने घर कुछ उद्योग करना नहीं पड़ेगा। आप शनिवार को सन्ध्या समय मेरे साथ चलियेगा और रविवार को प्रातः ही गृहिणी को ले गृहप्रवेश कीजियेगा। कन्या के भाई

लड़की और कुटुम्बों को ले कर दक्षिण टोले मे रतन सिंह के बगीचे मे रहेगे। कनक बाबू ने उन लोगों के लिये उस बाटिका को भाड़ा लिया है।

राजीव०—बहुत गोलमाल करने की क्या ज़रूरत है? सब काम चुपचाप ही कर लेना अच्छा है हम को पग २ पर शत्रु हैं।

बर०—आज तो मैं जाता हूँ।

राजीव०—हम एक बात और पूछ लेते?

बर०-कहिये न, सब बात ठीक ही कर के जाना अच्छा है।

राजीव०—ऐसी कोई बात नहीं है। दुलहिन का रंग कैसा है?

बर०—अंग बरन लखि तरुनअरुन कुन्दन मन लाजै।
चम्पा जरद जनाति कमल कम्पित दह भाजै॥
सुखद मनोहर रूप निरखि योगी मन डोले।
लाम्बी लट मुख लसै मनहुँ नागिनि ससि कोले॥
चंचल नैन निहार नाक की अपरूप सोभा।
लज्जा सो ह्वै गये अरुन बाढ़ी मन चोभा॥
सहज सरम सों सहमि हँकारत है कनखी सों।
कानाफूसी करन हेतु सुचि कान युगल कों॥
अधर सुधारस भरे, सरस बिद्रुम सों सोहै।
ओस भरे नव पदुम तामरस को मन मोहै॥
पीन पयोधर युगल गुलाबी बरन भये हैं

नव कदम्ब को फूल देखि हा ! सिहरी गये हैं ॥
यौवन के मदमत्त युगल गरिमा की मूरति ।
वक्षस्थल को राज लेन हित गहत बङ्क गति ॥
पै ताते नहिं उरज केर हिय श्रम ते पागै ।
कमल कमलदल मिलै दाग नेकहु नहिं लागै ॥
कोमलता को सार पीन कुच बिमल बने हैं ।
चिक्कन सुखद निरीठ याहिते कबिन गने हैं ॥
दै अंचल की ओट उरज को ओप दुरावति ।
मानो तम्बू गाड़ि विराजत है वर रतिपति ॥

जीव०—"हलाहल अमि अरु विष भरे रतनार ।"
नहीं, नहीं हुआ ।—
"अमी हलाहल विष भरे स्वेत स्याम रतनार ।
कटत फटत, बांधत बिंधत, भाषत है रसराज ॥"

(नहीं महाराज भूल गये ।) हाँ सो ऐसा ही होता है । जो लोग कौलेज में स्टाइपेन्ड पाते हैं वे लोग भी बरतुहार को देख कर हकबका जाते हैं, सब कुछ भूल जाता है ।

र०—" अमी हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार ।
जियत, मरत झुकि २ परत, जेहि चितवत एक वार ॥"

जीव०—आप हमारी सास से सब ठीक कर लीजियेगा । कहियेगा कि इस कविता को हम ही ने

है आप पूर्ण रसिक हैं इस का पता तो मुझे आप की पहली ही कविता से लग गया। हाँ "मधुमाछी" कैसे कहा था?

राजीव०—मधु नहिं मीठ मीत सुनु लागत। जो मधु-माछी डंस न मारत॥

बर०—अहा! क्या कहा!

राजीव०—जी हाँ।

बर०—आप चम्पकलता के योग्य तरु हैं, विधाता ने आप ही जोड़ी मिलाई है।

राजीव०—आप रात को अन्न खाते हैं तो?

बर०—हाँ, पर मुझे दक्षिण टोले में कुछ प्रयोजन है। मैं कनक बाबू के यहां भोजन करूंगा। देखिये जिस में कोई बात प्रकाश मत हो जाय। कनक बाबू इस मामले में हैं जिस में कोई यह बात जान न सके। अब मैं चलता हूं।

(प्रस्थान)

राजीव०—हमारा परम सौभाग्य है। हमारा गृह जो आज स्मशान हो रहा है कामिनी के आगमन से उज्वल लहलहाती हुई बाटिका सा हो जायगा (तकिया पर चित पड़ कर आंख बन्द कर लेता है।) अहा क्या अपरूप रूप! क्या ही मोहिनी झांकी! कञ्चनवर्ण! ताजा तैयार! अहा कैसी अच्छी, यह दूसरी शादी हुई (सो जाता है)

नेपथ्य में (इसी वक्त गड़ा दे, इधर से मैं सांप फेकता हूँ। दरीची से राजीव की अंगुली में काँटा चुभा देना।)

जीव०—बाप रे बाप ! गये —(बदन पर साठी का सांप गिरना) लील गया ! हाय ! मरे ! हाय गये (नेपथ्य में—सांप को खींच लेना) इतना बड़ा सांप तो कभी नहीं देखा (चित हो कर ज़मीन में गिर पड़ता है) एकदम ही लील गया, हमारी शादी हो चुकी। ओ राममणि ! राममणि ! ओ अभागी ! जल्दी आ, जल्दी आ, लहर से मर गये बाप रे बाप ! गहुमन साँप ने काटा है, एकदम मर गये। जल्दी आ, हमारा बदन अब सुस्त पड़ गया। हाय ! मेरी क़िस्मत में सुख नहीं है। यदि एक वार भी हम उस को देख कर मरते तो समझते कि अच्छा ही हुआ।

(राममणि आती है)

अंगुरी में गहुमन सांप ने काट दिया।

म०—बाप रे बाप ! सोहो तो, रक्त गिर रहा है। बाप रे बाप ! यह क्या हुआ ? कहां जाऊं ? क्या करूँ ? बाबूजी के सिवाय तो मुझे कोई है भी नहीं

जीव०—लोगों को पुकार ! लहर से मर गये। हाय सांप से मौत हुई (दरवाज़े का खटखटाना)।

म० आओ तुम लोग दौड़ो हाय मेरे बा

(दरवाज़ा खोल देती है) मेरे बाबू को सांप ने काटा, हाय क्या करूँ ?

(महल्ले के दो आदमी आते हैं)

प्रथम०—यह क्या ? यह तो खूब साफ़ दो दाँत उखड़ गये हैं।

द्वितीय०--आप ने सांप को देखा ?

राजीव०--अजगर, गोहुमन सुच्चा, हमारे हाथ में काटा, हमने देखा, मुंह बाकर गर्दन काटने आता था—कूद कर हम नीचे गिर पड़े।

प्रथम०—राममणि ! दौड़ो डोरी ले आओ। राममणि जाती है) (दूसरे से) तुम दौड़ो रामता को बुला लाओ। उस के बाप ने मरते समय उसे सांप का मंत्र सिखा दिया है। उस का मन्त्र बड़ा जागता है। (दूसरा प्रतिवासी पड़ोसी जाता है)

(राममणि डोरी ले कर आती है)

राम०—अरे भाई ! रामता को पुकारो। वह बड़ा अच्छा मंत्र जानता है।

प्रथम०—डोरी दो (डोरी ले कर राजीव का हाथ बांधता है।)

राम०—(राजीव के हाथ में चिउंटी काट कर) बुझाता है

ाम०-तब सर्वनाश हुआ। मेरा जलाकर्म और जला।

ाजीव०—और कोई मन्त्र नहीं जानता है?

थम०-रामता के बाप को मन्त्र साक्षात् धन्वन्तरि है। वह मन्त्र मरते समय उस ने किसी को न दिया, केवल रामता को सिखा गया।

ाजीव०-ऐसा सांप तो हम ने कभी नहीं देखा! हमारी लड़की को बुला लो, हमारा बदन घूम रहा है। अहा! प्रेम का केवल अंकुर उठा था। राममणि! सोचा था कि तुम से नहीं कहेंगे, हमारी शादी ठीक हुई है। रविवार को वहू घर में आती हाय २! कैसा आक्षेप हुआ। लक्ष्मी ऐसे घर में क्यों आवेगी?

ाम०—समझती हूं, फिर कोई रुपया धोखा देकर लेगया।

ाजीव०—बेटा? जो लेता उस को हम जानते हैं। अन्तिम समय तेरे साथ झगड़ा नहीं करेंगे। तू थोड़ा गङ्गाजल हमारे मुंह में दे, हमारी आंखें बन्द हुई जाती है।

ाम०—बाबू तुम को मैंने कितना भला बुरा कहा है हाय! तुम को छोड़ कर अकेली क्यों कर रहूंगी?

(रामता, भुवनमोहन, नरसिंह राम और कई पड़ोसी आते हैं)

राजी० रामता बाबू तुमने शापभ्रष्ट हो कमीने

के घर में जन्म ग्रहण किया है, नहि तो तुम देवता हो। तुम्हारा गुण सुनकर सभी तुम्हारी सुख्याति करते हैं। आज तुम मेरे वृद्ध शरीर की अपमृत्यु से रक्षा करो। तुम्हारा कल्याण होगा।

रामता०—(अंगुली देख कर) हैं! यह तो सुच्चे गहुमन का दाँत है!

रात को काटे गोहुमन साँप।
कहाँ बचावे ओझा बाप।

पर हाँ, समय पर बांध दिया गया है विष आगे न बढ़ेगा, इसी से कुछ भरोसा होता है। एक झाड़ू तो ले आओ।

(राममणि जाती है)

आप का बदन क्या सनसना रहा है?

राजीव०— खूब सनसनाता है—जान पड़ता है मैंने शराब पीली है।

रामता०—जान पड़ता है जमराज न छोड़ेंगे।

(झाड़ू हाथ में लिये राममणि फिर आती है)

रामता०—उस को यहाँ रख दो, देखें चपेटा घात से कहाँ तक कर सकता हूं (अपने हाथ को फूक कर राजीव की पीठ पर तीन धौल जमाता है) क्यों महाराज! लगता है?

राजीव०—रामताबाबू! जान पड़ता है। कुछ लगता है पर बेशी नहीं।

रामता०—तब संख्या कुछ बढ़ानी पड़ी (सात चपेटा मारता है)

राजीव०—कुछ २ लगत है ।

रामता०—ठीक कहिये। कहीं विष रहने पर भी "लगता है" कह कर सर्वनाश मत कीजिये ।

राजीव०—हम को ठीक नहीं मालूम होता फिर तो मारो ।

रामता०—हमारा हाथ झनझना गया (पड़ोसी से) क्यों साहब ! आप मार सकते हैं ? मैं आप के हाथ को मन्त्र से फूंकता हूँ ।

प्रथम प०-नहीं बाबू मुझ से नहीं होगा । इसी भुवन से कहो ।

रामता०—भुवन ! अपना हाथ दो तो (भुवन के हाथ को मन्त्र पढ़ कर फूंकता है) मारो ।

भुवन०—(स्वगत) हम लोगों का भात सड़ा दिया है, हम लोगों को जात से काट दिया है, आज देखूँगा (प्रकाश) कै धोल जमाना होगा ?

राम०-तीन ।

भुवन०—(गिन कर चपेटा मारता है) एक-दो-तीन चार-थाँ ।

प्र० प०—और क्यों ?

रामता०—छोड़ दो, होने दो, पर हाँ अब सात होना चाहिये

भुवन० यही पाँच यही छः यही सात

राजीव० चपेटघात से पीठ तो फूल उठा है, यह उसी के ऊपर मार रहा है। हम कुछ ठीक नहीं कर सकते हैं।

रामता०—मूलमन्त्र बिना अब विष न जायगा। (मन्त्र पढ़ता है)

बाल खोलि बँगालिन बिटिआ पाँव महावर लाय।
हूँ! कलसी कांख दाबि कर सुन्दरि नीर भरन को जाय
आँचल लटका सेज के नीचे देखा ढाबुस एक।
उछलि उठ्यो सुन्दरि के कुच पर बार न लायो नेक
नींद की माती अबला ने चट दाँत से काटा टाँग।
करेगा काम वही ऐसा, है जिस ने खाई भाँग॥
गरभवती भइ सती अभागी, पती नहीं घर माहिं।
युवती मौनवती है बैठी बात कहै कछु नाहिं॥
दैवयोग से सपेहरि मन बढ़ा अधिक अनुराग।
हँस हँस खाँस २ कर ओझा ओट्यो पचड़ा राग॥
हूँ! ऊँचे कुल की बहू अनोखी कौन कहै सब भेद।
छुवत पेट बच्चा जनमा इक विनसा मन का खेद॥
बेंग समान हाथ अरु पद भा मानुस सरिस सरीर।
गर्दन गिरगिट, सूअर सा मुँह, दुम जस बाँदर बीर॥
माय बाप सब छोड़ पराने बच्चा अकसर रोए।
सचमुच कचमच भुँड़ली खा कर पानी से मुँह धोए॥
कनगोजर घोड़रोज पका कर गोबरौरा सँग खाय।
दोउ हाथ से दो अजगर धर, दाँत गहूमनाराय

हूँ ! उतरे नभ से गरुड़ नरायन छोड़ सरग के काज
इक ठोकर मे बच्चे को वह लेगये अहिरिपुराज ॥
अँगुरी पड़ी रही पिरथी पर खगपति से बरपाय ।
ओझाबाप ने बढ़नी में चट राख्यो अपने धाय ॥
बढ़नी मारे अंगुरी नाचे मुरछित होवे सांप ।
डोमिन बेटी पेंचा की मा, हुकुम से छूटे सांप ॥

(तीन बार झाड़ु मारता है) अब तक भी क्या बदन घूम रहा है ।

राजीव०—रामता बाबू ! तुम उस पा जी का नाम मत लो

रामता०—मन्त्र में है उस का क्या करें। फिर मन्त्र पढ़ो जी !

राजीव०-अब की बार उस का नाम मुंह ही में कहना।

रामता०-जब तक रोगी मन्त्र नहीं सुनता तब तक क्या फल होता है ? चुप रहो (राजीव के मुंह के निकट झाड़ु घुमाता है) और मन्त्र पढ़ कर तीन बार झाड़ु मारता है) कैसा मालूम होता है ?

राजीव०—बाबू ! हमारा बदन घूम रहा है। विष के मारे घूमता है वा झाड़ु की चोट से सो हम ठीक नहीं कह सकते। आखीर की झाड़ु लगी है।

रामता०—अब डर नहीं है (झाड़ु से एक खर तोड़ कर अंगुरी में गड़ा देता है)

राजीव०-बाप रे बाप ! अब मरे दर्द थोड़ा कम हुआ था, इस ने और बढ़ा दिया बड़ा लहर देता है, मरे

रामता॰ मरे क्यों बच गये, जा अब दस घैले कूएं के पानी से नहला दे।

[रामता, भुवन मोहन, नरसिंहराम और पड़ोसी लोग जाते हैं]

भुवन॰—मैंने तो साले को खूब मारा।

रामता॰—वह बोतल कहाँ है?

नरसिंह॰—यही क्या है!

रामता॰—(बोतल ले कर) बच्चे को इसी अर्क़ में से थोड़ा सा खिलावेंगे।

भुवन॰—किस चीज़ का अर्क़ है?

रामता॰—इस में भटकोंइया का रस, नीम का रस, खरियानमक, रेंड़ी का तेल, लहसुन प्याज का रस और कुनैन है। थोड़ा सा नमक भी दिया गया है। इस का नाम नरामृत है।

"जो नर पान नरामृत करैं।
सहित सरीर स्वर्ग को चढ़ैं॥"

नरामृत में सहस्र गुण हैं देखो—

बासी मुंह जो बाँझ तिय, सुखद नरामृत खाय।
सात पुत्र गोदी भरै, प्रीतम लोटै पाय॥

भुवन॰ हाँ रे, कलाली से थोड़ी सी मदिरा नहीं लाये

रामता॰—मेरी तो राय थी पर नरसिंह ने कहा बुड्ढे का धर्म जायगा।

नर॰ चुप रह, आता है

(राजीव और दोनों प्रतिवासी का प्रवेश)

रामता०—हाथ का बन्धन खोल दीजिये, मैं नरामृत खिला दूँ।

द्वितीय०—(हाथ का बन्धन खोल देता है) वही तुम्हारे बाप वाला अर्क जान पड़ता है।

रामता०—जी हाँ (राजीव के मुंह में अर्क डाल देता है)

राजीव०—ओ राममणि ! ओय २! क्या खिलाया, ओ राममणि, थोड़ा पानी लिये आ, हाय कैसी बदबू करती है ! मरे रे !! ओय २ !!!

प्रथम०—यह तो बड़ी मुजर्रब दवा है। इसे पेट में रखे रहो।

राजीव०—बाप रे बाप गये, हम को तो वही सांप का काटना अच्छा था, उसी से मरते अच्छा होता ओ-ओ-ओ— । ओय २ इस-से-तो-मरना ही अच्छा था ओ-ओ—अहं बदबू से मरे ओ-ओ— अंतड़ी उभल पड़ी। अहं-अहं-ओय २।

रामता०—अब कुछ डर नहीं है। चंगे हो गये, दवा ने अपना काम किया। (राममणि आती है) घर के भीतर ले जाओ, रात में कुछ खाने को न देना, दो तीन बार दस्त होने से अच्छा होगा। वि' एकदम निकल जायगा।

(राममणि और राजीव एक ओर और शेष सब दूसरी ओर जाते हैं)

तृतीय गर्भाङ्क ।

स्थान—राजीवलोचन का आँगन ।

(राममणि और गौरमणि आती है)

राम०—रुपये से क्या नहीं हो सकता ? रुपया ले कर लड़की मछुआ बाज़ार में बेंची जा सकती है। बुड्ढे वर के हाथ में देना कौन बात है ?

गौर०-मुझे मालूम होता है कि उस टोले के छोकड़ों ने योंही झूठमूठ एक ठद्ठा निकाला है, कनिया वनिया कुछ नहीं है ।

राम०—नहीं रे ! मैंने चारू की मा को कनक बाबू के घर भेजा था । वह कहते हैं कि वृद्ध ब्राह्मण पुनः विवाह करना चाहते हैं इस लिये मैंने एक कनिया ठीक कर दी है । इसी से तो मुझे विश्वास होता है नहीं तो मैं क्या विश्वास करती ?

गौर०—सुनती हूँ कनिया योग्य है। वयस भी अधिक है।

राम०—सुनो, कितना ही वयस क्यों न हो पर बाबू को नहीं सजेगी । जान पड़ता है उस की माता नहीं है, नहीं तो ऐसे बुड्ढे वर को कन्या कभी नहीं देती ।

गौर०—नहीं दीदी ! रुपया जो न करे थोड़ा है ।

(सुशील आता है)

सु०—छोटी मौसी यह पुस्तक तुम्हारे लिये लाया हूँ
(गौरमणि को पुस्तक देता है)

राम॰ सुशील . क्या तुम आज जावगे ?

सु॰—मैं कब ठहर सकता हूँ ? कल हमलोगों का कौलेज खुलेगा।

गौर॰—तुम लोग क्या इंग्रेज़ी नहीं पढ़ते हो ?

सु॰—पढ़ते तो हैं, अब संस्कृत कौलेज़ में इंग्रेज़ी भी पढ़ाई जाती है और संस्कृत भी पढ़ाई जाती है।

गौर॰—मँझली दीदी से कहना कि पिताजी किसी तरह न मानेंगे, फिर विवाह अवश्य करेंगे।

सु॰—तुम सब जैसी पगली हो उसी से विवाह की बातें विश्वास करती हो—यदि मैं एक दिन और ठहरता तो पता लगा लेता कि कौन छोकड़ा उस दिन बरतुहार बना था।

राम॰-सो नहीं बाबू, झूठ नहीं है। मैंने देखा बरतुहार कोई विदेशी था इस गांव का नहीं।

सु॰—अच्छा ही तो, विवाह करने दो, मा तीन वर्ष से मातृहीना थीं फिर मा को एक मा हो जायगी, मुझे भी नानी कहे बहुत दिन हुए। वह सब कुछ नहीं है, तुमलोग निश्चिन्त रहो नाना कभी विवाह नहीं करेंगे।

(पेंचा की मा आती है)

यही नानी आयी। क्यों री पेंचा की मा ! तू मौसी की मा होने आयी है क्या ?

पेंचा०—मोल त इच्छा, बूढा न मय को देख कल खॉव २ कलता है।
गौरी०—ओः यह करिखाही कहती है क्या ?
राम०—पगली के संग अब तू क्या बकने लगी ?
सुशील०—अरी पेंचा की मा ! तू बुड्ढे ब्राह्मण से सादी करेगी ?
पेंचा०—अम तो लाजी, बुला नहीं न लाजी ओता।
गौरी०—जान पड़ता है अभागी पगली हो गयी-हाँ री पेंचा की मा तूतो डोमिन है ब्राह्मण से कैसे व्याह करेगी ?
पेंचा०—डोमिन बामनी में तफात का, तू बी पेट जलने पल खाती अम बी पेट जलने पल खाती औं, तुम को बी माल गाली छे खीछ ओती औ, मोला बी माल गाली छे खीछ ओता औ, तेले बाबू के मलने पल मुंह में आग छाती पल बाँछ, मोले मूले पल बी मुंह में आग छाती पल बाँछ। उछ का बी दांत गीला औ, अमला दांत गीला औ तब अम कम कैछे ?
राम०—अरे निगोड़ी पगली ! ब्राह्मण की मर्य्यादा नहीं जानता ?
गौरी०—चुप रह अभागी, चुड़ैल ! जा दीदी सुशील को भात दे।
सु०—नाना आवें तो दोनों आदमी संग ही खायंगे

राम॰—बाबू से व्याह करने की तेरी बड़ी इच्छा है।

पेंचा—जो बूढ़ा बामन मोल बल ओय त अम मआ-
माया के नय दमली चढ़ावें।

राम॰—क्यों री ! बाबू ने तुझे कुछ कहा क्या ?

पेंचा॰—वह का अमें देख छकता है? अमने तो
सुपना देखा।

गौर॰—तू ने स्वप्न में क्या देखा ?

पेंचा॰—जानूं बूढ़ा मोल बिये किया ओल अम उछ
के गोदी में लड़का दिया।

राम॰—यह बाबू से भी बेशी बौड़ही हो रही है।

पेंचा॰—छपने की एक दू बात छाँच ओती ए, मैं
आई छोंचती थी कि फलाने पुकाला।

सुशील॰—फलाने क्या?

पेंचा॰—अम उछ का नाम नई धलते, मोल छामी के
नाम छे लगता है।

गौर॰—मर निगोड़ी, उस का नाम था रामजी और
इस का नाम है रामता।

पेंचा॰—देखो पहिले ल पलता है न ?

सुशील अच्छा कहो रामता क्या कहता है ?

पेंचा॰—उछ ने कहा तेला भाग जगा, तेले छाथ बामन
का बिआह होगा। नगदीप के पंडित ने वस्ता
(व्यवस्था) दीऐ।

राम॰—नवद्दीप के पंडित घास खाते हैं उसी से ऐसी
व्यवस्था दी है।

पैंचा॰ लुपैया पाने छे गोलू खाने की वास्त,
है। यह कौन सी बात है ?

गौर॰—अच्छा, अब तू जा, बाबू के आने
हुआ। फिर तुझे देख कर मारे चपेटों
मुंह रंग देंगे।

पैंचा॰—छपना छत्त जो औय अमालों।
अस जूलब लुलु गला तिआलों॥
आत लेब चूली अलु ककनीं।
चोली पहनब धातीं अपनीं॥
ले पलात में खाइब बात।
माता तेल देब दिनलात॥
बेली मुंह में डालब लाख।
पिय लंग छोअब दियला लाख॥

राम॰—अभागी एकदम पगली हो गई इस क
सुनो। अरे यह तुझे किस ने सिखाया ?

पैंचा॰—फता।

सुशील॰—भारी दुष्ट है। हाँ रे पैंचा की मां
मांस कैसा लगता है ?

पैंचा॰—मूना गई खाये ओ ?

सु॰—हाँ।

पैंचा॰—तब छूअल भी खायेओ।

गौर॰—दुर कलमुहीं निगोड़ी।

पैंचा—मलकीनीं, खीजती काये ओ, छूअल
अच्छा आये

राम०—पेंचा की मा अब तू जा नहीं तो आज फिर मार खायेगी।

पेंचा०—अमको नून तेल नईए दो (नून तेल लेकर उसका जाना)

राम०—मेरा व्रत खराब हो गया तौभी बाबू ने रुपया नहीं दिया। सुनतीहूं बरतुहार साढ़े बारह गंडा रुपया लेगया है।

सुशील०—ब्याह तो जो होगा सो भगवान् जानते हैं पर इतना रुपया नष्ट हुआ।

(राजीव लोचन आते हैं)

राजीव०—(पीढ़े पर बैठकर) तुम क्या दो दिन भी नहीं ठहर सकते क्या अभी तक दादी का दूध पीते हो?

राम०—गौर! तू जा पान लगा मैं भात परोसने जाती हूं

(राममणि और गौरमणि जाती हैं)

राजीव०—तुम स्कालरशिप कब से पाओगे?

सु०—गत मास से पाऊंगा।

राजीव०—कै रुपया देगा।

सु०—दश।

राजीव०—ऊपर से क्या मिलेगा?

सु०—जो लोग सत्य के माहात्म्य को जानते हैं वे ऊपर का निकास किसको कहते हैं सो नहीं जानते।

राजीव०—दूसरों से ऐसी बातें की जाती हैं हम से छिपाने का क्या काम?

सु॰ आप सोचते है मैने झूठी बातें कहीं

राजीव॰—हम तो तुम को सेध देने को कहते नहीं अपनी बुद्धि से कलम के ज़ोर से जो रुपया पैदा करे उसे हम बहादुर जानते हैं।

सु॰—आप मुसल्मान का छूआ खाने में जैसा हिचकते हैं छल प्रपंच से मुझे भी वैसी ही घृणा है।

राजीव॰—तुम्हारे बाप मूर्ख हैं कि तुम्हें उन्हों ने कौलेज में पढ़ने को भेजा। कौलेजों में पढ़ने से लड़के केवल बचन बहादुर बन जाते हैं पर रुपये पैसे की निकास की राह नहीं देखते! मैं तो अच्छी सलाह देता था उल्टे ये मुझी से बहस करने लगे।

सु॰—स्टाइपेन्ड दस रुपया मिलता है उस में भला ऊपर से क्या मिले?

राजीव॰—रहने दो। हम जब नौकरी करते थे तब पांच रुपये महीने से पचास रुपया उपार्जन करते थे। यदि पांचही पर भरोसा करते तो यह बाग बगीचा जरजमीन कहां से होती? तुम भी ऊपर से पाते हो पर इस डर से कि कहीं बुड्ढा मांगने न लगे छिपा रहे हो। क्या झूठ है?

सु॰—हां ठीक तो ऊपर से पाता हूं।

राजीव॰—कितना।

सु॰—रविवार और गर्मी में।

राजीव॰—सो क्या?

सु०—इन दिनों कालेज जाना नहीं पड़ता है।

(राममणि भात लेकर आती है)

राजीव०—दो भात दो, इन सभों के साथ बातही करना व्यर्थ है।

राम०—(भात दे कर) दर्द कम हुआ ?

राजीव०—नहीं अभी तक टमक रहा है।

सु०—यह पैर में क्या है ?

राजीव०—उस टोले के छोकड़े चिढ़ाते थे उन्हीं के पीछे दौड़ते थे सो खाई में गिरपड़े जिस से पैर टूटगया।

सु०—शाम को हल्दी चूना गर्मकर रखना।

राम०—वृद्ध शरीर को बड़ा कष्ट हुआ। पर बाबू तुम रंज काहे होते हो। पेंचा की मा डोमिन ठहरी उस से विवाह क्या करने गये ?

राजीव०—तूभी हमारे पीछे पड़ी। तूभी चिढ़ाने लगी। खा, बदमाश खा, तूही भात खा (दोनों हाथ से थाली उठा कर फेंक देता है) खा अभागी, भात भी खा और हम को भी खा।

(जोर से निकल भागता है)

सु०—ऐसा पागल हो रहे हैं !

राम०—जैसी मैं अभागी हूं ! मेरा कर्म जला—घर दुआर सब सखरी हुआ

भु०—मैं जा कर लिवा लाता हूं।

राम०-जाओ पर मैं अब बेनहाये सुहानी में न जाऊंगी।

(दोनों जाते हैं)

द्वितीय अङ्क। प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान-बाग़ में मण्डप।

(भुवन, नरसिंह राम और केशव आते हैं)

केशव०—बरतुहार कहां से पाया ?

भुवन०—वह इन्स्पेक्टर साहब यहां उम्मीदवारी करता है। पंडिताई के लिये उसने दरख़ास्त दी है।

केशव०—वह बड़ा बुद्धिमान् है उसे अवश्य नौकरी देनी चाहिये।

(रामता चार आदमी के साथ आता है)

रामता०—बर के आने का समय हुआ। चलें हम सब वे बना लें!

भुव०—इन लोगों का घर कहां है ?

रामता०—यह कल्ह कहूंगा। यह कन्या के चचा, वह मौसा, ये भाई और वे पुरोहित हैं।

के०-मैं साली बनूंगा नहीं तो बात कैसे करूंगा।

रामता०—अच्छा तुम साली, भुवन समधिन, नरसिंह सरहज, और मैं सब से गयागुजरा ठहरा इस लिये कनिया बनूंगा,

केशव० हम लोगों का तो वेशी खर्च नहीं होगा

बहुत तो दस रुपया सो हमलोग चन्दा कर के देदेंगे और जो रुपया बुड्ढे ने दिया उसे उस की लड़कियों को देदेंगे। उन्हें भरपेट खाने को नहीं देता।

राम०—खर्च क्या ? गिलट के गहनों में जो लगा वही न ? चलो अब हम लोग चलें। (और चारों से) आप लोगों को जैसा कहा है वैसा ही कीजियेगा (चारों को छोड़ कर और सब जाते हैं)

चचा०—रामता बड़ा भारी नक्काल है।

मौसा०—बुड्ढा जैसा है वैसे ही उस को रामता भी मिला है।

भाई०—अच्छा कोहवर बनाया है। साज बाज सब ठीक है।

(बरतुहार और राजीवलोचन बर के भेष में आते हैं) राजीव गद्दी पर बैठता है।

च०—क्या यही बर है ? सोने की चम्पा को क्या इसी मुर्दे को सौंपूंगा ? ऐसा कभी नहीं होगा।

बरतुहार०—भाई चारो ओर देखना चाहिये।

च०—अपनी चारो ओर अपने पास रखो। मैं इस बूढ़े को अपनी आदर की कन्या नहीं दूँगा। भाई मर गये पर मैं तो ज़िन्दा हूँ। मैं क्यों उन की प्यारी लड़की को मुर्दे मरकट बर को दूँगा। हाय रुपया ! आपने रुपया ले कर हम लोगों का तो सत्यानाश कर दिया

भाई० चचा अब अधीर होने का समय नहीं है।

राजीव०—बाबू तुम्हीं इस का विचार करो।

वरतु०—यह आप के साले हैं आप के ससुर के बड़े लड़के

राजीव०—तब तो आप हमारे परम बन्धु हैं। भाई साहिब आप मेरी स्त्री के भाई ठहरे, माथा के भूषण, कपार के तिलक, हम आप के खड़ाऊं की खूँटी, अंग्रेज़ी जूते के फीते ठहरे, ऐसाही हो तो आप मुझे दो चार गालियाँ दें पर माँझ धार में मत डुबाइये। परदेश में ला कर फांसी दीजियेगा क्या ?

भाई०—अब क्या होगा जब बात दी गई है तब शादी होवे ही गी।

राजीव०—मर्द की बात, हाथी का दाँत।

चचा०—लो तब जो इच्छा हो करो। तुम लोग विधवा-विवाह की सहायता करते फिरते हो, देखता हूँ अपने ही घर से विधवाविवाह की राह खोल रहे हो।

भाई०—वर क्या ऐसा वृद्ध है कि सहजही काल का ग्रास हो जायगा। पुरानी हड्डी है अभी कितना जोखिम उठा सकती है। और हर्ज ही क्या है यदि राजीव बाबू के मरने पर चम्पक का पुनर्वार व्याह हो तो इन की मर्ज़ी इस के खिलाफ़ नहीं होगी कहिये तो ये एक *will* लिख जाँय।

राजीव॰ ठीक है विधवाविवाह करना तो धर्म ही है। यही कुछ खुशामदी, बुड्ढे बेवकूफ़ विद्याभूषण इस की विपक्षता करते हैं। सभ्यता का तो यह प्रधान चिह्न है।

चचा॰—देखता हूँ बर का विधवाविवाह पर बड़ा अनुराग है। साले बहनोई का अच्छा जोड़ा मिला।

राजीव॰—नये सम्प्रदायवाले सभी इसे मानते हैं।

चचा॰-तुम लोगों की जो राय हो करो अब मैं तीर्थ-वासी हो जाऊंगा।

भाई॰-जब बात ठीक होती थी तब तो आप ने कुछ नहीं कहा अब ऐसा करने से केवल निन्दा होगी।

राजीव॰—समय चूक फिर क्या पछितानी ?

बरतुहार॰—आप लोग वयस ही देख घबड़ा गये हैं। अरे इन में बहुतेरे गुण हैं—सम्पत्ति है, विद्या है, रूप है, रसिकता है, लड़की मेरे दोस्त की है, मैं उसे क्यों डुबाऊंगा ? उस पर स्नेह है तभी तो ऐसा गुणी बर खोज लाया हूँ।

पुरो॰-छोटे बाबू ! वाक्‌दान हुआ है, हर्दी लगी है, नान्दीमुखश्राद्ध हुआ है, बर जनवासे में आये हैं, अब यह अमङ्गल की बात ला कर विलम्ब क्यों करते हैं लग्न बीता जा रहा है। जो मर्ज़ी ! पर सोचना चाहिये विवाह भावी के अधीन है

मौसा॰ पुरोहित जी कहते हैं; छोटे बाबू . हृष्टचित्त

से कन्यादान दीजिये।

चचा०—अच्छा देखो तो बर को के दाँत हैं। जरा मुँह तो बाओ बाबू !

राजीव० बाँसुरी बेशी बजाने से मेरे कितने ही दाँत थोड़ी ही उमर में टूट गये। (दाँतदिखाता है)

चचा०—जब सब की राय है तो मेरा भी मत है।

राजीव० आप ससुर ठहरे पिता तुल्य। लड़के वालों को तो तम्बीह करना ही चाहिये। मा लड़कों को मारती पीटती है पर फिर उस को ले कर सस्नेह दूध पिलाती है।

चचा०—बाबू की बात सुन कर अंग शीतल हो गया।

राजीव०-आप ससुर ठहरे नहीं तो आप को आदिरस की कविता सुना देते।

बर०—अभी कुछ न बोलिये, लोग कहेंगे बर बेहया है। कोहवर में मेरा मान रखियेगा देखिये मेरी निन्दा न हो स्त्रियाँ यहाँ की बड़ी शोख हैं, बहुत दिक़ करती हैं, कान मलती हैं, घूसा मारती हैं, नाक काटती हैं, और कहां तक कहैं गोद में बैठ जाती हैं। वहाँ आप जीतें तो आप को बासरविजयी कहैं।

राजीव०—यह तो सुख का विषय है।

भाई०— अब ठट्ठा का समय नहीं है लग्न आ पहुँचा। वैकुण्ठ नाऊ को बुलाइये दूल्हे को मँड़वे में ले चले

(बैकुण्ठ आता है)

पुरोहित०—अरे ! बैकुण्ठ ! अब देर न कर, वर को गोद में ले और मंड़वे में ले चल।

बै०—आप ऐसा बूढ़ा वर लाये हैं कि हम से तो न उठेगा।

चचा०—मेरे वंश की यह चाल है, वर सभा से पाँव-प्यादे नहीं जाता, नाई की गोद में जाता है।

राजीव०—अरे हज्जाम के छोकड़े हम फुदुके बैठेंगे। देख न तू हम को उठा सकेगा, हम भारी नहीं हैं पहिले काम कर फिर हम तुझे खुश कर देंगे।

बै०—पाने की उम्मीद तो है पर कमर का क्या हाल होगा ?

भाई०—अरे उठाओ न, ज़रा सी बात के लिये क्या यह शुभकाम बन्द होगा ? वर बूढ़े है बेशी भारी नहीं होंगे।

बै०—पुराना चावल भारी होता है एक २ हड्डी लोहे की छड़ ही समझिये। क्या अपनी कमर तोड़ें ?

च०—उपाय ?

रा०—हम उछलते २ चलेंगे।

पुं०—प्रचालित रीत्यनुसार गोड़ से जमीन नहीं ठेकना चाहिये उछल २ कर जाने से तो ठेकेहीगा !

राजीव०—महाराज आप ने पहले क्यों नहीं कहा है एक मजबूत नाई ले आते।

एक साधारण बात के लिये आप लोग हल्ला मचाते हैं? नाई माथा धरे हम लोग धरें बस ले चलें।

-यह तो अच्छी बात है (चित्त सो जाता उठाओ २।

जी हां ऐसा तो हो सकता है।

(वैकुंठ माथा और बरतुहार और नाई धर कर ले जाते हैं)

-आज गुरू जी चटिया तेरा ससुरारी को ज
बँसवारी में मँड़वा सोहै, बैगन रोटी खाय॥

(कहते हुए सब जाते

द्वितीय गर्भाङ्क।

स्थान-बाग में एक कमरा।

कोहबर।

(रामता कन्या के वेष मे बैठा है, केशव भुवन नारी के भेष में आते हैं)

०-रतन! अच्छी तरह बैठो बुड्ढा आ रहा

२०- तूने ऐसे लड़कों को इकट्ठा किया है कि वे अ हल्ला मचादेंगे और सब भगडा फूट जायगा

ता० नहीं वे सब बड़े चतुर हैं अभी तू ने न

वे सब मंड़वे में कैसा हुदकाते थे, घुमाते थे और हंसी करते थे।

के०—अरे वह छोकड़ा कौन है जिस ने बुड्ढे के माथ पर एक कलसी गोबर डाला ?

रा०—वह हम लोगों के स्कूल में पढ़ता है—उसे एक दिन राजीव ने पिटवा दिया था इसी से वह रंज था—क्या सचमुच उस ने गोबर उभिल दिया ?

भु०—मैंने बुड्ढे का बदन धो दिया, रंज नहीं हुआ था। कहता था कि विवाह के समय ऐसी दिल्लगी हुआ ही करती है।

(नेपथ्य—यही कोहबर है)

केशव०—रामता ! घूँघट तान ले।

(राजीव दूल्हे के वेष में और नृसिंहराम और पांच अन्य लड़के नारी वेष में आते हैं)

नरसिंह०—बैठो भाई ! यहीं कनिया के पास बैठो।

राजीव०—(बैठ कर) हमारे मन में बहुत दुःख हुआ कि हमारी सास कनिआ की मा सो हमारी भी मा ठहरी सो हम को देख कर रोने पीटने क्यों लगी ?

के०—चम्पा अपनी मा की आदर की लड़की ठहरी तुम लोग तो जानतेही हो मा चम्पा का कितना लाड़ प्यार करती है। इस का कितना दुलार करती है। इसी से तो बिचारी रोती थी इस को तुम भी समझ सकते हो सब

की तो यही इच्छा होती है कि लड़की को अल्प वयस का वर मिले पर अब उन सब बातो का सोचही क्या है। अब तुम मा को पेट के लड़के से भी प्रिय हो। मा कहती है कि वह बचे रहें जिस में चमक पाँच दिन संसार का सधवा सुख भोग करे।

न०—ज़रा उठो तो बाबू देखें बढ़ुई तुम्हारे कहाँ तक होती है।

(रामता और राजीव एक साथ खड़े होते हैं।)

केशव०—अच्छी जोड़ी मिली है जो हो बैठो (दोनों बैठते हैं)

राजीव०—हमारा शरीर पवित्र हुआ, नरजन्म सार्थक हुआ जो हमने आज ऐसी नारीरत्न लाभ किया। हमने विचार कराया था तो गणकों ने कहा था कि इस मास के शेष में हम को एक स्त्रीरत्न लाभ होगा सो आज हुआ मेरा दिन पलटा।

भुवन०—ओ मा ! क्या तुम बैल हो ? भाभी ने बैल से शादी की।

राजीव०-बैल तो नहीं थे पर तुम लोगों ने बना दिया।

केशव०—बाबू जी ने ठीक कहा था वर बड़ा रसिक है।

भुवन०—कोहवर रस का आगार नहीं २ वृन्दावन है जिस को जो भाता है वही कहा करता है

नर० सोलह सौ गोपी और एक माधव—द्वै २ गोपी बिच २ माधव ।

राजीव०—"आवन श्याम कहेव परसों । सखि बीत गयो बरसों २ ॥

प्रथम बालक०—वाह २ रसिकराज तार ढीला पड़ता है ज़रा खूंकी तो ममोर दें (कान मलता है)

राजीव०—ओह बाप रे (ज़ोर से कान मलता है) मरे दादा (फिर) गये ! प्राण गया (फिर कान मलता है) जान लेली (नाक मलता है) साँस फूल गयी, अब नहीं बचेंगे । दम फूल गया ओ राममणि !

सब०—माई रे ! यह क्या ?

भुवन०—राममणि कौन है जी ! कानं छूने से इतना गुल करते हो तो बहू का चपेटा कैसे सहोगे ? छिः २ ऐसा बर तो कभी न देखा नहीं छिः यही तुम्हारी रसिकता है ?

राजीव०—कान की राह तो सब रस निकल गया, चिल्लायें नहीं तो क्या करें ?

भुवन०—जानते नहीं दुधार गाय का दो लात भला ।

कहो-गालियां तो तीर सी चुभ जाती है जानी मेरी ।
भूल जाता हूँ मैं मगर देख के सूरत तेरी ॥

राजीव०—हमने तो तम्हीद में गुल किया ।

भुवन०-सच ? लो तब मक्खन खिलाती हूँ (कान मलता है)

राजीव०—ऊः ऊः अच्छी रूप सी है ! (कान मलना) मरे ! ओह अच्छी सुन्दरी है ! अहा, हाथ कैसा कोमल है ।

भुवन०—नहीं रसिक तो है ।

केशव०—एक ग़ज़ल तो पढ़ो ।

राजीव०—तुम लोग स्त्री हो ज़रा नाचो तो हम सुनें ?

द्वितीय०—नाच देखा जाता है सुना नहीं ।

राजीव०—नाच सुना भी जाता है देखा भी जाता है । तुम नाचो, हम तुम्हारे नूपुर का झङ्कार सुनेंगे ।

भुवन०—पहले तुम एक ग़ज़ल पढ़ो तो मैं नाचूँगी ।

केशव०—सो क्या भाई ! कहो तो ग़ज़ल नहीं पढ़ने से मा क्या कहेगी ? तुम दुआह हो पर चम्पा तो नहीं न है । तुम्हारी साध पूज गयी है पर उस की तो नहीं न पूजी । ग़ज़ल पढ़ो हँसी ठट्ठा करो उजबुक कैसे क्यों बैठे हुए हो ?

राजीव०—जान पड़ता है हमारी सास ग़ज़ल बहुत पसन्द करती हैं अच्छा कहते हैं (सोच कर) हमें भाई याद नहीं आता । कहो तो दो चार दोहरा कवित्त सुनादें ।

भुवन० दोहरा कवित्त समधिन से कहना हमलोगों

ने तो तुम्हें एक छन के लिये पाया है एक ग़ज़ल पढ़ो।

राजीव:—हमारी ब्राह्मणी क्या तुम्हारी समधिन है ?

भुवन॰—हाँ हे ! समधिन की शादी होने के पहले ही दामाद मिला।

राजीव॰—समधिन की बातें बड़ी मीठी हैं मानों मिसरी की डली, ऊख का रस, हमारे कानद्वारा पुनः एक बार रस पान कराओ तो। समधिन तुम्हारा नाम क्या है ?

केशव॰—तुम्हारी समधिन का नाम है चन्द्रमुखी।

राजीव॰—हाँ समधिन तुम्हारा नाम सचमुच क्या चन्द्रमुखी है ?

भुवन॰—हमारा मुंह क्या चन्द्रमा सा है जो मेरा ऐसा नाम यह होगा।

राजीव॰—समधिन ! ब्राह्मणी के साथ हमारे घर चलो। तीनों मिल कर ब्याह का खेल खेलेंगे।

भुवन॰—बूढ़ा समधी लंगड़ भतार। सुख नहिं हियरा होय हमार॥

नर॰—दुःख की बातें कहाँ तक कहूँ उस का भतार उस को बहुत चाहता है, प्राण से भी अधिक मानता है उस का बयस भी कम है पर दोनों टाँग का लंगड़ है

समाधेन को एक पूरा भरतार हो जायगा।
पौवारह है.

केशव०—तुम सबो ने व्यर्थ मे रात काटी ? ग़ज़ल की बात भूल गये ?

राजीव०—ग़ज़ल तो नहीं पर हाँ एक यही सुन लो :—

भज रे मन हरिनाम।
मिथ्या माया केवल छाया, सम्पति औधन धाम।
दारा सुत परिजन मन मेरे आवत हैं नहिं काम॥
अंत समय हरि एक सहायक भज हरि आठो जाम॥

न०—क्या मधुर गान ! मेरी इच्छा होती है कि अभी कुँजवन जा कर राधिका रानी की दासी बनूँ।

(नेपथ्य में) ज्ञान का इतना प्रकाश है, हृदय में वैराग्य का यह दिव्य विकाश है तो साला व्याह करने क्यों आया ?

रा०—यही देखो चिढ़ाने लगा पाजी मेरा पिण्ड कहीं नहीं छोड़ता। अब बदमाश को बिना मारे न छोड़ेंगे (दौड़ना चाहता है)

सब०—हैं हैं ! यह क्या ? कहाँ चले ? इतना गुस्सा क्यों (सब बैठाते हैं)

रा०—कुछ नहीं छोड़ दो। रामता बदजात सिवाय और कोई नहीं होगा। हर जगह मेरे पीछे लगा रहता है साले का खून किये बिना न रहेंगे।

के०-वह कौन है? (सब हँसते हैं और राजीव बैठता है)

राजीव० एक कमीने का लड़का स्कूल मे पढ़ता है।

न० याद पड़ा, एक दिन आप को साँप ने काटा था, हम सब घबड़ा गई कि यह तो "चढ़ा भइहर उतरने" चाहता है।

राजीव०--उन सब बातों को न छेड़ो मुझे गुस्सा होता है।

सब०—क्यों क्या हुआ था ?

रा०—सब उसी साले की बदमाशी थी मारते २ पीठ फुला दिया, आज तक दर्द नहीं गया, साले को देखें तो जिन्दे खा जाँय। यह सब बात छोड़ो देर हुई मुझे नींद आती है।

तृतीय बालक०--कोहबर में सोने से कन्या वर में मेल नहीं होता।

नर०—नहीं जी तुम्हें हम सब सोने न देंगी। हम सबों पर मन नहीं उठता ? मैं अपने स्वामी को सुला कर आई हूँ आज सारीरात जागूँगी।

राजीव०—रात में बेशी जगने से मेरे पेट में दर्द हो जाता है।

भुवन०-यही रे समधी समधिन के संग एक बार रस-केलि करना चाहते हैं इसी से फुसला कर हम लोगों को घर भेज रहे हैं।

केशव०--अच्छा तो, तब हमलोग चलें चम्पा कुछ कच्ची थोड़े ही है।

नर०—नहीं रे यों कहः—

एको री पिय है सखी कयो री पिय नाहिं।
बराबरी कैसे करो पूरी परै कि नाहिं॥

०—समधिन नवीन युवती हैं। साठ बरस का एक भरतार नहीं पा कर बीस २ वर्ष का तीन पातीं तो अच्छा होता।

(राजीव के पास जा कर) तब भाई इसी चम्पा को ले आमोद करो हम सब जाती हैं। देखना भाई कच्ची उमर है यत्न से रखना, शान्तरूप से व्यवहार करना, अनार तोड़ते कहीं डाल न टूटे सावधान।

—बीबी तो मुंह से मुंह सटाये जाती है कहीं खा न जायं।

०—काटने में हर्ज ही क्या है ? बहनोई भरतार तो कुछ गाली नहीं है। सुना नहीं "साली पन्द्रह आना मेहर"

—पन्द्रह क्यों सवा सोलह। क्यों क्या लड़कों में नहीं कहा जाता—'मौसी मौसी मौसी, मा मरे तो माई मौसी।"

—भाभी जीजा को बरना चाहती है इसी से ऐसा कहती हैं चलो। (राजीव और रतन को छोड़ कर सब चले जाते हैं, खिड़की बन्द कर दी

है हमारे अन्धेरे घर की चन्द्रज्योति हम सूखे तरुवर के कोमल हरे पात, हमारे जीवन का आधार, हमारी अमूल्यनिधि ! अपने गुलाम को ज़रा मुंह दिखा दो जिस में मुझे स्वर्गसुख हो।

ाम०—(गैंठी खोल कर)

छमा करहु छन एक नाथ दासी हूँ तेरी।
दम्पति सुखद विहार लखन हित युवति घनेरी॥
अहैं खड़ी दौ ओट सबै जैहैं जब निजघर।
कोहबर हास विलास करहु तब मनभावन बर॥

ाजीव०—हम देख आते हैं (देखता है) जन प्राणी क्या यहाँ चिड़िये का पूत भी नहीं है। प्राण-कान्ता ! चन्द्रमुख दिखाओ।

ा०—अच्छा २ प्रानपति झांकन दो एकबार।
सुखद झरोखा ओट में खड़ी अहैं बरनार॥
(चारो ओर देख कर दोनों बैठ जाते हैं)

ाजीव०—हमारे पास आओ, एक वार हम तेरा हाथ धरें, खिसक आओ।

ा०—दूर रहूँ अथवा निकट दोऊ नाथ समान।
जौलों प्यारो हृदय में पावति हूँ नहिं थान॥

ाजीव०—प्रेयसि ! हम वियोगअग्नि में दग्ध थे; तुम ने मेरे शरीर पर वचन रूपी अमृत छिड़क दिया। हमारी यन्त्रणा राममणि और गौरमणि नहीं जानतीं। ये सब तुम्हारी सौतिन की लड़की हैं

तुम्हे खूब मानेंगी। तुम्हें मा कहेंगी नही तो तुम निकाल देना सब तो तुम्हारा ही है।

ा०—सुनती हूँ हे नाथ ! तिहारी सुता लड़ाकिन।
तुम सम परम पवित्र पिता सों झगड़ति निसदिन॥
जोड़ हाथ तुव दासी है यह भिक्षा मांगति।
परबस वें नाहिं करैं-अहै तुम बिन नहिं ममगति॥

ाजीव०—तुम मेरे नैनों का तारा, जीवन का धन ठहरीं किसी को छूने भी नहीं देंगे। राममणि को भी तुम्हारा मुँह न दिखावेंगे। घर में बन्द रखेंगे। मेरा सब कुछ तुम्हारा ही होगा (कमर से चाभी खोल कर देता है) लो खजाने की चाभी। प्रेयसि मैं तुम्हारा दास हूँ। आओ तुम्हारी पूजा करें।

ामता०—तिय को पिय साधन को धन है, विधिपूजन को तोहि नाथ सुनाऊँ। हिय मन्दिर में कमलासन पै धरि यत्न सों पायन सीस नवाऊँ॥ मन एक है बासना छाड़ि सबै बर भक्ति सों प्रीतम-देव मनाऊँ। मन भृङ्ग को राखि पदाम्बुज में सहजे भवसागर पार है जाऊँ॥

अब पूजा को सुनहु बिधाना।
देव अराधन की विधि नाना॥
पिय पग ध्यान धरूं मन लाई।
मधुर बचन जल सो नहवाई॥

आदर चन्दन गंग लगाऊं
गलभुज दै उपबीत बनाऊं ॥
कमल कपोल पुष्प दे हाथ।
कुच पुंगीफल नारँगि साथ ॥
यथा साध्य पिय देव मनाऊं।
अधर मधुर रस सुधा छकाऊं ॥
रसकवित्त संगीत सुनाई।
अस्तुति करूं सहज मन लाई ॥

वर मांगूं कर जोड़ युग, अबला सरला नारि।
कबहुँ न तुव पद मन तजै, दासी सरन तिहारि ॥

(पैर धरता है)

राजीव०—सोने का चन्द्र तुम ने आज मुझे स्वर्ग पहुंचा दिया हम घर नहीं जाँयगे। बिधुबदनी एक कविता कहो।

रा०—परलोक गये हैं पिता जब से जननी संग बैठ के रोअति हूं। दुःख सिन्धु मंझार पड़ी निसिवासर आंसुन सों मुख धोअति हूं॥ सब सोक वियोग नसे सुनु पीतम बात नहीं कछु गोअति हूं। गुनवान रसज्ञ पतीलखि आज सुहाग के बीज को बोअति हूं ॥

राजीव०—हाय ! ऐसा मधुमय बचन कभी नहीं सुना। मानों अमृत की धारा बह चली हो। प्रेयसि ! बियोग ऐसी ही वस्तु है जैसा पुरुष को वैसे ही

स्त्री को भी यह दुःखित करता है भेद यही है कि पुरुष रोते चिल्लाते हैं और स्त्रियां आह मार दम साध चुप बैठ जाती हैं।

राम०—कामिनि अङ्ग अनङ्ग बिना पर से सुनु प्यारे।
करत प्रहार प्रसून बान बिरहिनि मन हारे॥
मानिनि बिरह बियोग व्यथा नहिं अधरन आने।
बिकल अकेली बैठि रुदति कोउ अपर न जाने॥
नव योवन सुन्दरता सुभग, मनसिज सर नासत अहैं।
जस बर चन्दन द्रुम को, दुखद दास कीट सहजहि दहै॥

राजीव०—अहाहा! ऐसी स्त्री तो कभी नहीं देखी। मेरे किसमत में इतना सुख बदा था। पत्नी के मरने पर ऐसा सुख मिला सच है "भाग्यवान् की जोरू मरे। घोड़ा मरे अभागे का" प्रेयसि ज़रा मेरे गाल पर हाथ तो धरो।

रा०—यदपि वयस अति अल्प है, बुद्धि प्रौढ़ मम नाथ।
सुख संचार करन चहो, तुव कपोल दे हाथ॥
(गाल पर हाथ रखती है)

राजी०—धन्य भाग्य! आज सुबह रामता साले का मुँह देखा था उस पाजी का मुंह देख कर ऐसा रत्न लाभ करेंगे सो तो सपने में भी नहीं सोचा था ज़रा तुम्हारी बदन देखें रंग कैसा है?

रा०—मेरे सबै तन जीवन प्रान सुयौवन सम्पति आपनि मानो। जो मन भावे करो मनभावन

बाधा नहीं कछु है मन ठानो पै तुव चेरीन लाजे मरे बिनती यही नाथ कही महँ आनो। दासी किनी तुवहू सुनु प्रीतम पायन को निज भूषण जानो।

तुव सुहाग सों विदूल होई। जो हिय प्रेम रखूं नहिं गोई। कोहबर निसि कुच कुम्भ दिखाऊँ। सखिन सासुहे लज्जा पाऊँ। कौतुक रागिनि रसमयी बाला। ताली दे मोहि करहि बेहाला। नैनन चाह सबै मुसकाई। कहिहै मोहि निलज्ज चबाई। कोमल चित्त व्यंग कस सहिहों। सुनत कलङ्क मौन है रहिहौं। आज कान्त हठ तुम जनि करहू। देख बाम कर धीरज धरहू।

(बायां हाथ दिखाता है)

राजीव०—अहा क्या देखा, बलैया लूं! कुर्बान जान? अहा धन्य भाग्य!

तड़ित जोति सीतमतमात सुन्दर मख शोभा।
युगल नरँगी लसत सुउर पर लखि मन लोभा॥
सुरस सुधासन सनीबात सुनि कान जुड़ानी।
तेरे चरनन को रिनियां मन भ्यो मनमानी॥
अब नहिं तो कहँ छाड़ि दास तुव रूप निहरिहै।
प्यारी विरचित काव्य अहै वर रस को कूआँ॥
हम बूढ़े कवि मूढ़ करत हौं हूआँ हूआँ।
जो रचना सुनि दास केर धिक्कार देउ नहिं॥

अपनी मधुररु सरस कवित उच्चारों तुम पहि

रा०—कविकुल भूषणनाथ तुम, सुरस केर भण्डार।
छलना जनि मों से करो, अबला निपट गँवारि॥
निज कविता को एक पद, मों सों कहो रसज्ञ।
देखि रावरो रूप गुण, मोहितहूँ हे विज्ञ॥

राजीव०—"कटहल कोआ सम है प्रीत" इत्यादि पढ़ता है।

रा०—कविता सुमनोहर औरु गंभीर हैं भाव की हैं मनभावन चोखी। रस की सरिता प्रभु दीन्हीं बहाइ, दिखाइ के प्रेम को पंथ अनोखी॥ बिन मोल बिकी तुव हाथ ललाहुं, कहै किन लाख चवाइन रोखी। तरुनाइ को खो तुम खोवा भये, रस बाढ़े सुनाउ कहावत नोखी॥

राजीव०—सुन्दरि! मेरी नींद जाती रही। आज की रात हमें दिन सी मालूम होती है। तुम मेरे पास आओ दो एक बातें पूछ लूँ।

रा०—गुप्त बात को है नहीं, उचित समय प्रभु आज।
साली सरहज नाथ तुव, सुनिहैं पाइब लाज॥

राजीव०—किसी को आने न देंगे। आवो आवो (अंचल खींचता है)।

रा०—रसराज हहा करि लाजै मरी।
मम अञ्चल छोड़ो सुपाँय परी॥
छमहू प्रभु योवन हीन लली।

भ्रमरा को कहा रस देत कली ॥
नव पीन पयोधर होंहिगे ज्यों।
रस-सागर नागर अर्पब त्यों ॥
सुख होंहिंगे आगे न सोंच करो।
टुक मानस-रञ्जन धीर धरो ॥

(जाना चाहता है)

राजीव०—सुन्दरि ! अभी अधिक रात नहीं बीती है तुम जाओगी तो हम फांसी लगा कर मर जांयगे। (हाथ धर खींचता है) ।

रा०—प्रथम समागम मों जंत्रना उचित नाहि, छाड़ो २ हाथ नाथ वेदना बढ़ति है। निसि अवसान प्राय निसिकर अस्त भयो पूरब गगन ऊषा मोहिनी उठति है ॥ जाने देहु हाय होत विहंग सुखद रव, भई अति देर दासी लाजन मरति है। दिवस मँझार प्यारे कामिनी सुकंत कहँ मधुर सुखद मधु देइ न सकति है।

राजीव०—प्राण मत लो। मैं रत्न सिंहासन बनता हूँ तुम जगन्नाथ स्वरूप हमारे ऊपर बैठो। (रामता का पैर धरकर सो रहता है)

रा०—आवत हँसी निहारि यह, प्रीतम तेरो भाव
पितु सम बूढ़ो पतिहहा ! लोटत है अब पांव

(दरीची से नरसिंह झाकती है)

न यह क्या ? दोनों हाथ से खाते हैं केला कटहल

पकाने से मीठा नहीं होता समयही का सब अच्छा है। (जाता है)

रा०—छीः तुम ने क्या किया इन के आगे कैसे मुंह दिखाऊंगी।

छीछी लाल न लाज सों हाय मरी मैं आज।
बर कन्या को प्रथम निसि देख लीन्ह सब काज।

(जाना चाहता है)

राजीव०—हाय! तुम चली जाती हो। रक्षा करो ब्रह्महत्या हुई।

रा०—रात बीत गई मुरगा बोला कोकिल पुकार रहा है।

(चला जाता है)

राजीव०—बदमाश, बदजात पाजी छिनाल छोकड़ी ने दरीची से पुकार कर आफ़त मचादी। कनक बाबू को अमरूद और शरीफ़ा भेज देगें उन्हीं के प्रसाद से यह रत्न लाभ किया है।

(नृसिंह और भुवन आते हैं)

भुवन०—क्यों कैसा आमोद प्रमोद हुआ।

न०—मेहमान! बैठे २ सोंच क्या रहे हो? स्वर्ग की सीढ़ी का पहिला पांव यही है। नहीं जानती चम्पा के सयानी होने पर क्या हाल होगा?

नहिं पराग नहिं मधुर मद, नहिं बिकसेव है बाल।
अली कली ही से बिंधेव आगे कौन हवाल॥

भौंरा! बच कर रहना चम्पा है (दोनों हँसते हैं)

जीव०-हमसे न बोलो हम पागल हो रहे हैं। ठीक नहीं कर सकते जिन्दे हैं कि मुर्दे। हमारी स्वर्ण-लता को यहीं लादो। हम छूएंगे नहीं केवल देखेंगे उस के पास बैठे रहने से हमारा चित्त शान्त और मन ठिकाने रहता है-तुम्हारे पैरों पड़ूँ।

न०—वह मा के पास है नहीं आ सकती। दो घंटे में घरही जायगी। क्या हम सब पर तुम्हारा मन नहीं उठता ?

भु०—बड़े सुख की बात है कि तनिक में समधिन से तुम्हारा ऐसा मन मिल गया।

न०—मेहमान ! अपनी लड़कियों को कहना चम्पा का आदर करेंगी।

राजीव०—हमने मनही मन सब को गांव से निकाल दिया वे अब नहीं हैं। डर मत कीजिये सब मंगलही मंगल है।

भुवन०—चम्पक-समधिन। सौतिन का नाम सुन जलती हैं और इधर तुम्हें सौतिन की जन्मी लड़की है देखो जिस में बदन न छूएं नहीं तो चम्पक पानी में डूब जायगी। सुना है नहीं 'काठ को भी सौत नहीं भाती।'

राजीव०—तुमलोग कुछ चिन्ता न करो।

भुवन०-चम्पा का अच्छा भाग्य था कि ऐसा बर मिला

न०—चलो उबटन लगावो। तड़के ही भेजना होगा

(सब जाते हैं)

तृतीय अङ्क

स्थान राजीवलोचन का अँगना।

(राममणि और गौरमणि आती है)

राम०—हाय क्या भगवती ऐसी दया करेंगी कि विवाह मिथ्या हो।

गौर०—सच ही हो तो अपना उस में क्या बस है? वह तो हमलोगों की मां नहीं आवेंगी। हमी लोगों को मा बनना पड़ेगा, वे लड़की की तरह रहेंगी, आगे क्या? पर युवती का सुख स्वामी-विलास है सो तो हमलोग नहीं दे सकती हैं—स्वामीसुख तो उन्हें कभी न होगा। बाबू तो जिन्दे ही मुरदा हैं।

(राजीवलोचन आता है)

राजीव०—अरे राममणि तेरी मा आई है डोली से उतार ले।

राम०—सचमुच करम जल गया जले कर्म में आग लगी। बुड्ढे बाप का व्याह हुआ क्या करूँ?

राजीव०—मैंने तो आदर से पुकारा और यह लगीं रोने पीटने जैसे अभी इन का लड़का मरा है।

गौर०—कहाँ है लावो देखें। बाप हो कर गाली क्यों देते हो?

राजीव०—बन्धु बाबा के पास उन्हीं के संग आती है

गौर०—यह बन्धु-बाबा कौन है?

राजीव॰ जो बरतुहार आये थे उन को तुम्हारी मा बन्धु-बाबा कहती हैं इसी से हम भी कहते हैं। बन्धुबाबा इधर ही लिये आओ।

(कनिआ का हाथ धरे बरतुहार आता है)

गौर॰—देखूं कनिआ का मुंह कैसा है।

बर॰—मेहमान ! छूने मत दीजियेगा।

गौर॰—देखूं कनिआ का मुंह कैसा है। देख दीदा मा देख।

बर॰—छूने मत दीजिये कह देते हैं।

राम॰—(बरतुहार से) अभागा चंडाल मेरे ही ऐसा तेरी पत्नी का भाग हो। कहां न कहां से आकर इस बुड्ढे वयस में बाबू का व्याह कराया जैसा हमारा नाश किया तेरा भी हो।

बर॰—गाली मत दो। बहू का मुंह देख लो दुःख दूर हो जायगा।

(मुसकुराता हुआ जाता है)

राजीव॰—तू सचमुच बाघिन हो गई। जा घर का दरवाजा खोल, ब्राह्मणी को घर में धर आवें।

गौर॰—हम लोग छूना नहीं चाहतीं। तुम्हीं मुंह दिखा दो।

(पांच लड़के और कितने ही लोग आते हैं)

लड़के॰—बूढ़ा बाम्हन उजबुक बर।
पेंचा की माई से सगाई कर।

रामम णि० (मुह देखकर) यह पेंचा की मा तो नहीं है ?

राजीव०--दुष्ट ! पाजी ! पेंचा की मा कहां से आई ? यह देख........। (घूंघट उठाता है)।

गौर०—अरे यह तो सचमुच पेंचा की मा है । कहां जाऊं, क्या करूं ? बदन में गहना न देखो जैसे मारवाड़िन की छोकड़ी हो ।

राजीव०-ऐं हमारी प्यारी ! हाय क्या हुआ ! यहीं आकर पेंचा की मा हो गई ! हाय ! अरे अभागी-तू यहां कैसे आई ? (छाती पीटकर) कनकराय का घर सूना हो जाय ! कफन देनेवाला न रहे ।

पेंचा०—ले अपने ललके को गोदी। (सूअर का छवना फेंकती है)

राजीव०-राम २ यह क्या किया अरे तेरा नाश हो चांडाल तू चली जा यहां से (मारता है)।

पेंचा०-अले बाबू (गोदी में छौने को लेती है) मेली गोद में आओ बाबू !

राजीव०—"दूर हो दूर हो" (कहता हुआ दौड़ जाता है) राममणि और गौरमणि हंसती हुई चली जाती हैं

(नेपथ्य मे) यह सब साले रामता की बदमाशी है।

पेंचा की मा०—छोटी बेटी गई। बड़ी बेटी गई—

मोल्ला बामन भताल कहाँ गया।

रामता०—आ! आ! मेरे साथ चल तेरे हेराये धन को खोज दूँ।

(सब जाते हैं)

पटा क्षेप

